# ऋषि प्रसाद

संत श्री आसारामजी आश्रम
द्वारा प्रकाशित
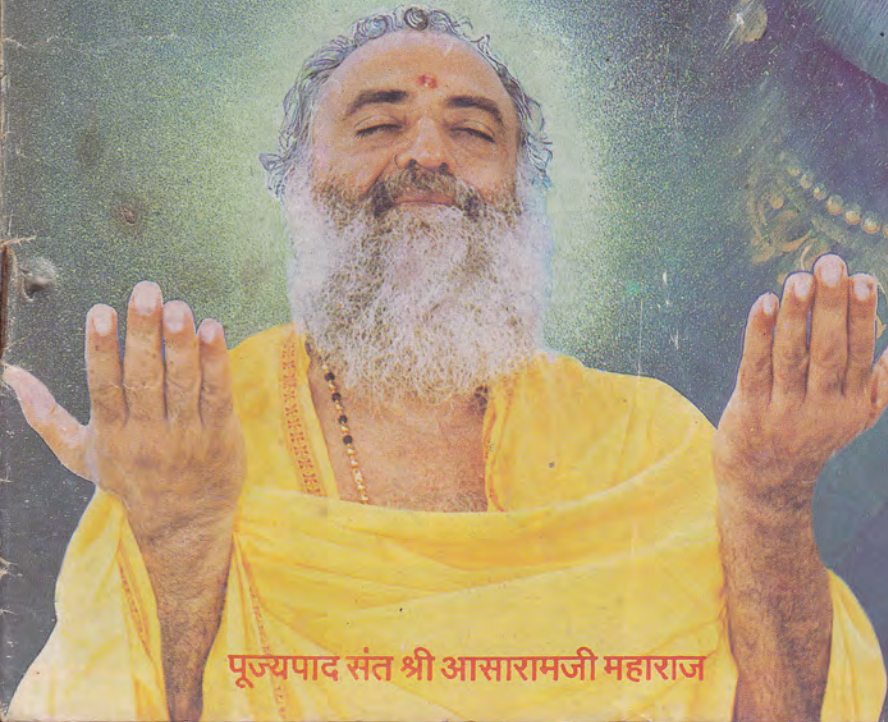
भगवान श्रीराम

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

वर्ष : ७
अंक : ४६

# ऋषि प्रसाद

वर्ष : ७
अंक : ४६
९ अक्तूबर १९९६

सम्पादक : क. रा. पटेल
प्रे. खो. मकवाणा

मूल्य : रू. ६-००

**सदस्यता शुल्क**

भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. ५०/-
(२) आजीवन : रू. ५००/-

**विदेशों में**
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300



कार्यालय
**'ऋषि प्रसाद'**
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : (०७९) ७४८६३१०, ७४८६७०२.



प्रकाशक और मुद्रक : क. रा. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५ ने
विनय प्रिन्टिंग प्रेस, मीठाखली, अहमदाबाद, पारिजात प्रिन्टरी, राणीप, अहमदाबाद में छपाकर प्रकाशित किया।




*जीवन है तो उसमें जख्म तो होने ही वाले हैं और संग्राम है इसलिए उसमें कुछ कष्ट तो उठाना ही पड़ेगा। इन विषमताओं के बीच भावनाशीलता, श्रद्धा और पुरुषार्थ का दीपक न बुझ जाए यह ध्यान रखते हुए हमें चिर विकास की पगडंडी पर निरन्तर गतिमान बनना है।*

## प्रस्तुत है...



**भूल-सुधार :** गतांक (सितम्बर ९६ अंक नं. ४५)आवरण पृष्ठ २ में बीचवाले दो विभूतिवाले फोटोग्राफ के नीचे कृपया इस प्रकार पढ़ें : *''पूज्यश्री के साथ वृन्दावन के सरलस्वभाव संतप्रवर पू. श्रीपाद बाबा।''* तीन विभूतिवाले फोटोग्राफ के नीचे कृपया इस प्रकार पढ़ें : *''पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे हुए श्री विरक्तशिरोमणि श्री बलरामदासजी एवं श्री विरक्त बाबा।''*

*'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें।*

## अजर अमर तू बनता जा...

अविचल हो तुम अविकल हो ।
अविनाशी अरु अविकारी ॥
अज अखण्ड अमृतमय हो ।
शक्ति स्वरूप सदा सुखकारी ॥
निर्भय हो जा प्यारे तू ।
तोड़ लाएगा तारे तू ॥
महाशक्ति को धारे तू ।
काल चक्र को मारे तू ॥
तू ईश्वर का अंश पुरुष है ।
होता है क्यों उदासीन-सा ॥
कर्मोपासना की शक्ति से ।
बढ़ जा उल्टी धार मीन सा ॥
तू काम निरंतर करता जा ।
ध्यान प्रभु का धरता जा ॥
कहे अमरता हाथ जोड़ के ।
अजर अमर तू बनता जा ॥
तेरा आत्मा ही बन बैठा ।
पूरण सृष्टि ब्रह्म स्वरूप ॥
हरि-हर-विधि भी आकर झुकते ।
सेवा में रहते सुर भूप ॥
देह 'नहीं तू जीव नहीं तू ।
जन्म नहीं ना मरण कहीं ॥
परम पिता परमेश्वर जिसको ।
कहते हैं तू वो शिव ही ॥

*- अशोक राजपूत*
*लश्कर, ग्वालियर (म. प्र.).*

## खुद को ही महका लो रे...

राम नाम का सुमिरन करके ।
जीवन सफल बना लो रे ॥
पापों को मिटा दो रे ।
कल्मष को हटा दो रे ॥

देहभाव और विषयवासना ।
भोग स्वार्थ को त्यागो रे ॥
बैरागी बन जग में रहकर ।
खुद को ही महका लो रे ॥
रामनाम०

साधु संत की सेवा करके ।
सच्चा रास्ता पा लो रे ॥
उनकी करुणा-कृपा दृष्टि से ।
सच्चे सुख को पा लो रे ॥
रामनाम०

शबरी केवट जैसे तर गये ।
तुम क्यों डूबे जाते रे ॥
बीच भँवर में डूब रहे क्यों ।
मुख से राम निकासो रे ॥
रामनाम०

*- आशिष शर्मा*
*ब्रह्मपथ सिरोज*
*जिला विदिशा (म.प्र.)*

# काम-क्रोध से बचो

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया :

**अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।**
**अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥**

'हे कृष्ण ! फिर यह पुरुष स्वयं न चाहता हुआ भी बलात्कार से लगाये हुए के सदृश किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है ?' (गीता:३.३६)

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

**काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।**
**महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम् ॥**

'हे अर्जुन ! रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है । यही महाशन अर्थात् अग्नि के सदृश भोगों से तृप्त न होनेवाला बड़ा पापी है । इस विषय में इसको ही तू वैरी जान ।' (गीता : ३.३७)

काम और क्रोध जीव को वास्तविक सुख से, वास्तविक जीवन से दूर ले जाते हैं । ये 'महापाप्मा' हैं । जीव का पतन करनेवाले हैं । चित्त में अनेक कामनाएँ उठती हैं और वह उन कामनाओं की पूर्ति करके सुखी होना चाहता है किन्तु जब कामनापूर्ति करने जाता है तो कामनापूर्ति होने पर लोभ, लालच बढ़ जाते हैं । अगर कामनापूर्ति नहीं होती है और उसमें कोई बड़ा आदमी विघ्नरूप बनता है तो भय होता है, छोटा आदमी विघ्नरूप बनता है तो क्रोध होता है और बराबरी का आदमी विघ्नरूप बनता है तो ईर्ष्या होती है, द्वेष पैदा होता है । सच्चा सुख तो कामना निवृत्त करने से मिलता है ।

> *कामनापूर्ति में कोई बड़ा आदमी विघ्नरूप बनता है तो भय होता है, छोटा आदमी विघ्नरूप बनता है तो क्रोध होता है और बराबरी का आदमी विघ्नरूप बनता है तो ईर्ष्या होती है, द्वेष पैदा होता है । सच्चा सुख तो कामना निवृत्त करने से मिलता है ।*

**प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।**
**आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥**

'हे अर्जुन ! जिस काल में पुरुष मन में स्थित संपूर्ण कामनाओं को त्याग देता है, उस काल में आत्मा से ही आत्मा में संतुष्ट हुआ स्थिर बुद्धिवाला कहा जाता है ।' (गीता : २.५५)

वह स्थिर बुद्धिवाला पुरुष ही आत्मशांति को प्राप्त हो सकता है । जैसे सागर में तरंगें उठती रहती हैं वैसे ही जिसके चित्त में इच्छारूपी तरंगें उठती रहती हैं वह आत्मशांति नहीं पा सकता है । वासनायुक्त चित्त से उठती हुई इच्छाओं की पूर्ति करते रहने से इच्छाएँ शांत नहीं होती हैं अपितु बढ़ती चली जाती हैं, चित्त में गहरी उतरती जाती हैं । इसी इच्छापूर्ति में तो आयुष्य पूरा हो जाता है परन्तु इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं । इसलिए भर्तृहरि ने कहा है :

**तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।**

इच्छा-तृष्णा तो जीर्ण नहीं होती है किन्तु हम जीर्ण हो जाते हैं । हमारा मन, हमारी बुद्धि, इन्द्रियाँ जीर्ण होती जाती हैं ।

जिसको यह बात समझ में आ जाती है वह फिर इच्छापूर्ति में नहीं, इच्छानिवृत्ति में लग जाता है । नासमझ आदमी इच्छापूर्ति में लगा रहता है और अपनी आयुष्य गँवाता रहता है ।

मिथिला का राजा निमि भी इच्छापूर्ति करके सुखी होना चाहता था । कामनापूर्ति से कामना बढ़ती है । एक रानी होते हुए भी उसे दूसरी रानी लाने की इच्छा हुई । फिर तीसरी, चौथी, पाँचवीं... ऐसे कई रानियाँ ले आया । जो जी में आया वह खाया-पिया और भोगा । इस तरह भोग भोगते-भोगते शरीर रोगी हो गया लेकिन कामना नहीं मिटी ।

राजा निमि को दाहज्वर हो गया । उसकी हालत

देखकर हकीमों ने कहा :

"राजन् ! मृत्यु का समय निकट है । अब केवल एक ही उपाय है । कोई प्रेम से चंदन घिसे और आपके शरीर पर उसका लेप करे तो दाहज्वर में आपको थोड़ा आराम हो सकता है ।"

**इच्छा-तृष्णा तो जीर्ण नहीं होती है किन्तु हम जीर्ण हो जाते हैं । हमारा मन, हमारी बुद्धि, इन्द्रियाँ जीर्ण होती जाती हैं ।**

कामनाएँ दाह और तपन पैदा करती हैं । भय, शोक, ईर्ष्या और चिंता पैदा करती हैं । नरकों की यात्रा करानेवाली कमबख्त कामनाएँ ही हैं । नहीं तो आपको भला कौन नरक में ले जा सकता है ?

राजा दाहज्वर से पीड़ित अवस्था में सोया हुआ था । रानियाँ प्रेम से चंदन घिसने लगीं । चंदन घिसते वक्त रानियों के हाथ की चूड़ियाँ खनकती थीं । राजा को चूड़ियों की आवाज से भी पीड़ा हो रही थी । उसने रानियों से कहा :

"चंदन घिसना है तो घिसो, किन्तु आवाज मत करो ।"

**राजा निमि उसी दाहज्वर में उठा । गृहलक्ष्मी और राज्यलक्ष्मी को दूर से प्रणाम करके आत्मलक्ष्मी पाने के लिये गुरु के द्वार जा बैठा ।**

पतिपरायणा नारियों ने सौभाग्य की निशानी के रूप में एक-एक चूड़ी रखी । बाकी की चूड़ियाँ उतारकर रख दीं तो चंदन घिसते वक्त जो आवाज हो रही थी, वह बंद हो गई । राजा ने पूछा :

"चंदन घिसना बंद कर दिया क्या ?"

"नहीं । चंदन तो घिस रहे हैं लेकिन आपने कहा इसलिए हमने आवाज बंद कर दी है ।"

"कैसे बंद की ?"

"हाथों में चूड़ियाँ ज्यादा थीं तो खनक रही थीं । अब केवल एक ही रखी है, बाकी की चूड़ियाँ उतार दी हैं ।"

**वास्तव में जीवमात्र योगसम्राट है लेकिन अभागी कामनाएँ ही उसे भोग का कीड़ा बना देती हैं ।**

राजा निमि का पूर्व का कोई पुण्य उदय हुआ । उसे हुआ कि बहुतों में खटपट होती है, अकेले में ही शांति है । वह तो उसी दाहज्वर में उठा । गृहलक्ष्मी और राज्यलक्ष्मी को दूर से प्रणाम करके आत्मलक्ष्मी पाने के लिये गुरु के द्वार जा बैठा ।

**अमीरी की तो ऐसी की कि सब जर लुटा बैठे ।**<br>
**फकीरी की तो ऐसी की कि गुरु के दर पर आ बैठे ॥**

वह ऐसा फकीर बन गया कि उसने इच्छा-वासनाओं की फाकी कर ली, संशय व फिकर की फाकी कर ली । मौत के पहले अमर आत्मपद में स्थित हो गया । भोगसम्राट में से योगसम्राट हो गया ।

वास्तव में जीवमात्र योगसम्राट है लेकिन अभागी कामनाएँ ही उसे भोग का कीड़ा बना देती हैं ।

सब लोगों की सब कामनाएँ-इच्छाएँ पूरी हो जाएँ, यह संभव नहीं है । यह किसीके वश की बात भी नहीं है । इच्छापूर्ति में प्रारब्ध चाहिए, पुरुषार्थ चाहिए । साथियों का, समाज का सहयोग चाहिए लेकिन इच्छानिवृत्ति में हम स्वतंत्र हैं । ज्यों-ज्यों इच्छा निवृत्त करते जाएँगे, त्यों-त्यों इच्छारहित आत्मपद में विश्रांति पाते जाएँगे । विश्रांति से सामर्थ्य प्रगट होता है । उस सामर्थ्य के सदुपयोग की कला आ जाए तो सत्यस्वरूप आत्मा की यात्रा पूर्ण हो जाएगी ।

यदि इस संसाररूपी दलदल से आप बचना चाहते हैं तो सदा सावधानी रखें । इन्द्रियाँ बार-बार फिसल जाती हैं, कामनाएँ चित्त को घसीटती रहती हैं । इसको रोकने के लिये विवेक-वैराग्य को सदा जागृत रखें । श्रद्धा, भक्ति, विवेक से हमारी रक्षा होती है । कामनापूर्ति करते-करते तो युग बीत जाते हैं लेकिन जन्म-मरण के चक्कर से हमारा पिंड नहीं छूटता । इसलिए बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि वह कामना-निवृत्ति में ही लगा रहे । इस संदर्भ में एक कहानी है :

सिंध देश की बात है । किसी गुंडे आदमी ने एक व्यापारी से १०० रूपये उधार लिये । उस समय के १०० रूपये माने आज के करीब ८०००-९००० रूपये या डेढ़ तोला सोना ।

कुछ दिन बीतने पर व्यापारी ने उस गुंडे से कहा :

''तुमने मुझसे १०० रूपये लिये थे । मैं तुमसे ब्याज तो नहीं माँगता हूँ लेकिन १०० रूपये दे दो तो ठीक होगा ।''

हालांकि व्यापारी जानता था कि वह देनेवाला नहीं है, फिर भी मिल जायें तो ठीक ।

गुंडे ने कहा : ''रूपये तो मैं देना चाहता हूँ किन्तु मेरी एक बात तुम्हें माननी होगी ।''

''अरे ! एक तो क्या, तीन-तीन बात मान लूँगा । तुम पैसे वापस दे दो, बस ।''

''मैं पैसे वापस तो देना चाहता हूँ किन्तु तुम सौ के कर दो साठ ।''

''ठीक है चलो, साठ ही सही ।''

''आधा कर दो काट ।''

''ठीक है । बाकी के ३० तो दे दो !''

''दस देंगे, दस दिलवाएँगे और दस के जोड़ेंगे हाथ ।''

तो अब बाकी क्या बचा ? कुछ नहीं । ऐसे ही आपके मन में सौ-सौ कामनाएँ उठें तो आप मन से कह दो : 'सौ की कर दे साठ । आधा कर दे काट । दस कामनाएँ पूरी करेंगे । दस बाद में पूरी करवाएँगे । दस के लिये हाथ जोड़ेंगे । अभी तो राम में लगने दे, यार ! अभी तो समाहितचित्त होने दे... अंतर्यामी आत्मा में शांत होने दे ।'

मन की 'यह चाहिए... वह चाहिए...' की आदत पुरानी है । जिसकी चाह होगी वह नहीं मिलेगा तो मन अशांत होगा । काम-क्रोध में बह जाएगा । इसलिए प्रयत्नपूर्वक मन को काम-क्रोधादि आवेगों में बहने से बचाकर बार-बार आत्मा में लगाओ । क्योंकि...

**त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन: ।**
**काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥**

'काम, क्रोध और लोभ ये तीन प्रकार के नरक के द्वार हैं, आत्मा का नाश करनेवाले अर्थात् अधोगति में ले जानेवाले हैं । अत: इन तीनों को त्याग देना चाहिए ।' (गीता:१६.२१)

*प्रयत्नपूर्वक मन को काम-क्रोधादि आवेगों में बहने से बचाकर बार-बार आत्मा में लगाओ ।*

धन के ढेर इकट्ठा करना, सत्ता के ऊँचे शिखरों पर पहुँचने की कामना करना मूर्खता है । मन को कामना-वासनारहित करके प्रारब्धवेग से निष्काम प्रवृत्ति करना या निवृत्ति में रहना बुद्धिमानी है । बुद्धिमान पुरुष बुद्धि की धारा में, विचार की धारा में जीता है लेकिन बुद्धि को जहाँ से सत्ता-स्फूर्ति मिलती है उसी चैतन्य में बुद्धि को स्थित करना चाहिए । विचार की धारा के बीच माने एक विचार उठा, दूसरा उठने को है उसके बीच जो अवकाश है उसमें जो टिकता है वह चैतन्य, साक्षी, शुद्ध स्वरूप में जीता है । कामनापूर्ति के पीछे यदि भागता रहे तो उस भागदौड़ का कभी अंत नहीं होगा किन्तु कामनानिवृत्ति में जो लगता है वह देर-सबेर बुद्धत्व को पा लेता है । इसलिए श्रीकृष्ण ने कहा है :

*कई जन्मों से हम कामनाओं के पीछे बरबाद होते आ रहे हैं । अब इस जन्म में तो दृढ़ निश्चय कर लो कि अमर आत्मपद को पाकर ही रहेंगे ।*

**एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।**
**जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥**

'इस प्रकार बुद्धि से परे अर्थात् सूक्ष्म तथा सब प्रकार से बलवान और श्रेष्ठ अपने आत्मा को जानकर बुद्धि के द्वारा मन को वश में करके हे महाबाहो ! अपनी शक्ति को समझकर इस दुर्जय कामरूप शत्रु को तू मार ।' (गीता : ३.४३)

कई जन्मों से हम कामनाओं के पीछे बरबाद होते आ रहे हैं । अब इस जन्म में तो दृढ़ निश्चय कर लो कि अमर आत्मपद को पाकर ही रहेंगे । जिन्होंने भी दृढ़ निश्चय किया और तत्परता से लगे रहे, काम-क्रोधादि से सावधान होकर संयमी जीवन जिये उन्होंने उस आत्मपद को पा लिया । आप भी उस पद को पा सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है ।

❀

## असंभव कुछ नहीं... सब कुछ संभव है...

### - पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

सन् १९१० की एक घटित घटना है :

जर्मनी का एक लड़का वुल्फ मेहफिन स्कूल में ढंग से पढ़ता न था । मास्टर की मार के भय से एक दिन वह स्कूल छोड़कर भाग गया । भागकर वह गाड़ी में जा बैठा किन्तु उसके पास टिकट नहीं था । जब टिकट चेकर टिकट चेक करने के लिए आया तो वह सीट के नीचे जा छुपा किन्तु उसके मन में आया कि 'यदि टिकेट चेकर आकर मुझसे पूछेगा तो मैं क्या करूँगा ? हे भगवान्... ! मैं क्या करूँ तू ही बता...' इस प्रकार प्रार्थना करते-करते उसे कुछ अन्त:प्रेरणा हुई । उसने पास में पड़ा हुआ कागज़ का एक टुकड़ा उठाया और मोड़कर टिकट के आकार का बना दिया । जब टिकट चेकर ने टिकट माँगा तो वुल्फ मेहफिन ने उसी कागज के टुकड़े को देते हुए कहा : ''This is my Ticket. यह मेरा टिकट है ।''

> *वुल्फ मेहफिन को युक्ति आ गयी कि प्रार्थना करते-करते मन जब एकाग्र होता है तब आदमी जैसा चाहता है वैसा हो जाता है । धीरे-धीरे उसने ध्यान करना शुरू किया और उसका तीसरा नेत्र आज्ञाचक्र खुल गया ।*

> *असंभव कुछ नहीं है । इस दुनिया में आत्मा की शक्ति से सब कुछ संभव है । जहाँ आप आत्मशक्ति को लगाते हैं वहाँ वह कार्य हो जाता है ।*

उसने इतनी एकाग्रता और विश्वास से कहा कि टी. सी. को वह कागज का टुकड़ा सचमुच टिकट जैसा लगा । तब उसने कहा : ''लड़के ! जब तेरे पास टिकट है तो तू नीचे क्यों बैठा है ?''

यह कहकर टी. सी. ने उसे सीट दे दी । वुल्फ मेहफिन को युक्ति आ गयी कि प्रार्थना करते-करते मन जब एकाग्र होता है तब आदमी जैसा चाहता है वैसा हो जाता है । धीरे-धीरे उसने ध्यान करना शुरू किया और उसका तीसरा नेत्र (जहाँ तिलक करते हैं वह आज्ञा चक्र) खुल गया ।

फिर तो वह तीसरे नेत्र के प्रभाव से लोगों को जादू दिखाने लगा । जो चीज 'है' उसे 'नहीं' दिखा देता और जो चीज 'नहीं' है उसे 'है' दिखा देता । धीरे-धीरे उसका नाम दूर-दूर तक प्रसिद्ध होने लगा । यहाँ तक कि रशिया के प्रेसिडेण्ट स्तालिन के कान में भी वुल्फ मेहफिन की बात पहुँची ।

स्तालिन नास्तिक था । अत: उसने कहा : ''ध्यान-व्यान कुछ नहीं होता । जाओ, पकड़कर लाओ वुल्फ मेहफिन को ।''

वुल्फ मेहफिन एक मंच पर खड़ा होकर लोगों को चमत्कार दिखा रहा था, वहीं उसे स्तालिन के सैनिकों ने कैद करके स्तालिन के पास पहुँचा दिया ।

स्तालिन ने कहा : ''यह जादू-वादू कैसे संभव हो सकता है ?''

मेहफिन : "Nothing is impossible. Every-thing is possible in this world."

असंभव कुछ नहीं है । इस दुनिया में आत्मा की शक्ति से सब कुछ संभव है । जहाँ आप आत्मशक्ति को लगायें वहाँ वह कार्य हो जाता है ।

जैसे विद्युत को आप फ्रीज में लगायें तो पानी ठण्डा होगा, गीजर में लगायें तो पानी गर्म होगा और सिगड़ी में लगायें तो आग पैदा करेगा । पंप में लगायें तो पानी को ऊपर टंकी तक

पहुँचा देगा । विद्युत एक शक्ति है । उसे जहाँ भी लगायेंगे, वहाँ उस साधन के अनुरूप कार्य करेगी । विद्युत शक्ति, अणु शक्ति, परमाणु शक्ति आदि सब शक्तियों का मूल है आत्मा और वह अपने हृदय में रहता है । अतः असंभव कुछ नहीं ।

स्तालिन : ''यदि सब संभव है तो मैं जैसा कहूँ वैसा तुम करके बताओ । मास्को की बैंक से एक लाख रूबल लेकर आओ तो मैं तुम्हें मानूँगा । बैंक के चारों ओर मेरे सैनिक होंगे । तुम किसी और से पैसे लेकर नहीं जाओगे । बैंक में खाली हाथ जाओगे और बैंकवाले से एक लाख रूबल लेकर आओगे ।''

*स्तालिन बड़ा डरपोक व्यक्ति था । 'कोई मुझे मार न डाले' इस डर से उसके पाँच सौ कमरे में से वह किस कमरे में रात को रहेगा इस बात का पता उसके अंगरक्षकों तक को नहीं चलने देता था ।*

मेहफिन : ''मेरे लिए असंभव कुछ नहीं है । मुझे ध्यान की कुँजी पता है ।''

मेहफिन गया बैंक के कैशियर के पास और कागज लेकर उसे भरा, और भी जो कुछ करना था वह किया । फिर वह पर्ची कैशियर को दी । कैशियर ने एक लाख रूबल गिनकर मेहफिन को दे दिये । मेहफिन ने वे रूबल ले जाकर स्तालिन को दे दिये ।

**_आत्मा की यह शक्ति जब तीसरे केन्द्र में आती है तब असंभव-सा दिखनेवाला कार्य भी संभव हो जाता है । इस शक्ति को अगर योग में लगाये तो व्यक्ति योगी हो जाता है और अगर भगवान को पाने में लगाये तो व्यक्ति भगवान को भी पा लेता है ।_**

स्तालिन हतप्रभ रह गया कि : ''यह कैसे संभव हुआ ! तुम्हारे सिवा उस बैंक में दूसरा कोई जा न सके, ऐसा कड़क बंदोबस्त किया गया था । फिर भी तुम पैसे कैसे निकाल लाये ? अच्छा, अब उसे वापस देकर आओ ।''

मेहफिन पुनः गया बैंक में कैशियर के पास और बोला : ''कैशियर ! मैंने तुम्हें जो Self Cheque दिया था लाख रूबल का, वह वापस करो ।''

कैशियर ने वह कागज निकालकर देखा तो दंग रह गया । 'इस साधारण कागज की पर्ची पर मैंने लाख रूबल कैसे दे दिये !' सोचकर वह घबरा उठा । मेहफिन ने कहा : ''इस पर्ची पर तुमने मुझे लाख रूबल कैसे दे दिये ?''

कैशियर : ''मुझे माफ करो, मेरा कसूर है ।''

मेहफिन : ''यह तुम्हारा कसूर नहीं है । मैंने ही दृढ़ संकल्प किया था कि यह कागज तुम्हें लाख रूबल का 'सेल्फ चैक' दिखे इसीलिए तुमने लाख रूबल गिनकर मुझे दे दिये । लो, ये लाख रूबल वापस ले लो और मुझे यह कागज दे दो ।''

कागज ले जाकर स्तालिन को बताया । स्तालिन के आश्चर्य का पार न रहा । फिर भी वह बोला : ''अच्छा, अगर आत्मा की शक्ति में इतना सामर्थ्य है तो तुम एक चमत्कार और दिखाओ । मैं रात को किस कमरे में रहूँगा यह मुझे भी पता नहीं है । अतः आज रात के बारह बजे मैं जिस कमरे में सो रहा होऊँगा वहाँ आकर मुझे जगा दो तो मैं आत्मा की शक्ति को स्वीकार करूँगा ।''

स्तालिन बड़ा डरपोक व्यक्ति था । 'कोई मुझे मार न डाले' इस डर से उसके पाँच सौ कमरे में से वह किस कमरे में रहेगा इस बात का पता उसके अंगरक्षकों तक को नहीं चलने देता था । ११२ नंबर के कमरे में सोयेगा कि ३१२ में, ४०८ में सोयेगा कि ८८ में... इसका पता किसीको नहीं रहता था । स्तालिन ने अपने महल के चारों ओर इस प्रकार सैनिक तैनात कर रखे थे कि कोई भी उसके महल में प्रवेश न कर सके । उसने आदेश दे दिया कि आज रात को कोई भी व्यक्ति उसके महल में प्रवेश न कर सके इस बात का पूरा ध्यान रखा जाये ।

फिर भी रात्रि के ठीक बारह बजे स्तालिन के कमरे

में पहुँच कर मेहफिन ने दरवाजा खटखटाया। स्तालिन दंग रह गया और बोला : ''तुम यहाँ कैसे आ सके ?''

मेहफिन : ''आपने पूरी सेना तैनात कर दी थी ताकि कोई भी महल में प्रवेश न कर सके। सैनिक किसीको भी नहीं आने देंगे किन्तु सेनापति को तो नहीं रोक सकेंगे ? मैंने सेनापति बेरिया (तत्कालिन के.जी.बी. का चीफ) का ड्रेस पहना और दृढ़ संकल्प किया कि 'मैं सेनापति मि. बेरिया हूँ... मैं मि. बेरिया हूँ...' और उसी अदा से तुम्हारे महल में प्रवेश किया। मैंने ध्यान करके पता कर लिया कि आप किस कमरे में सो रहे हो। मुझे आता देखकर आपके सैनिकों ने मुझे सेनापति बेरिया समझा और सलाम करके मुझे आसानी से अंदर आने दिया। इसलिए मैं आपके कमरे तक इतनी सरलता से, आत्मा की शक्ति से ही आ गया।''

**महापुरुष अपनी आत्मशक्ति से लोगों का मन भगवान में लगा देते हैं। कीर्तन कराते-कराते संप्रेक्षण शक्ति बरसाकर लोगों की सुषुप्त शक्तियाँ जगा देते हैं।**

आत्मा की यह शक्ति जब तीसरे केन्द्र में आती है तो असंभव-सा दिखनेवाला कार्य भी संभव हो जाता है। इस शक्ति को अगर योग में लगाये तो व्यक्ति योगी हो जाता है और अगर भगवान को पाने में लगाये तो व्यक्ति भगवान को भी पा लेता है। जिस-जिस कार्य में यह शक्ति लगायी जाती है वह-वह कार्य अवश्य सिद्ध हो जाता है लेकिन शर्त केवल इतनी ही है कि दूसरों को सताने में यह शक्ति न लगाई जाय। अगर दूसरों को सताने में इस शक्ति का उपयोग किया जाता है तो हिरण्यकशिपु जैसी या रावण और कंस जैसी दुर्दशा होती है। यदि अच्छे कार्यों में उपयोग किया जाता है तो व्यक्ति हजारों-लाखों लोगों को उन्नत करने में भी सहायक हो जाता है। फिर वही व्यक्ति महापुरुष बन जाता है... जैसे, एकनाथजी महाराज।

**सच्चे संतों के प्रति किसीको नफरत है तो समझ लेना कि उसके ऊपर कुदरत का कोप होगा। सच्चे संतों के प्रति जिनको श्रद्धा है तो समझ लेना कि देर-सबेर उनके हृदय में भगवान प्रगट होनेवाले हैं।**

एकनाथजी महाराज के पास कोई ब्राह्मण पारस रखकर यात्रा करने के लिए निकल पड़ा। एकनाथजी महाराज ने उस पारस को पूजा के पाटिये के नीचे रख दिया। उनके श्रीखण्ड्या नामक सेवक ने उस पारस को पत्थर समझकर गोदावरी में फेंक दिया।

जब वह ब्राह्मण यात्रा करके वापस आया और उसने अपना पारस वापस माँगा तब सेवक ने कहा :

''अरे ! मैंने तो उसे सामान्य पत्थर समझकर गोदावरी में फेंक दिया।''

ब्राह्मण उदास हो गया। उसे उदास देखकर एकनाथजी महाराज ने कहा : ''चलो, गोदावरी के तट पर।''

गोदावरी के तट पर पहुँचकर एकनाथजी महाराज ने गोदावरी में गोता मारा और ब्राह्मण का जैसा पारस पत्थर था उसी प्रकार के बहुत सारे पत्थर लेकर बाहर निकले और उस ब्राह्मण से बोले : ''अपना पारस पहचानकर ले लो।''

वह ब्राह्मण तो दंग रह गया कि 'मैं तो पारस-पारस करके दुःखी हो रहा था लेकिन एकनाथजी महाराज ने अपने योगबल से सभी पत्थरों को पारस करके दिखा दिया !'

महापुरुषों के पास ऐसी शक्ति होती है लेकिन वे उसका उपयोग अपने अहं के पोषण अथवा प्रजा के शोषण में नहीं करते। उनकी दृष्टिमात्र से लोगों का चरित्र भी उन्नत होने लगता है। उनकी नूरानी नजर से अभक्त भी भक्त बनने लगता है। वे अपने कृपा-प्रसाद से लोगों के हृदय में भक्ति, ज्ञान, आनंद और माधुर्य भर देते हैं... प्रेम भर देते हैं... यह शक्ति का सदुपयोग है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

दिनांक : १४ अक्तूबर '९६
पूज्यश्री के आत्म-साक्षात्कार दिवस पर विशेष

# आत्म-साक्षात्कार

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

**नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।**
**स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥**

'हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और मुझे स्मृति प्राप्त हुई है । इसलिए मैं संशयरहित हुआ स्थित हूँ और आपकी आज्ञा का पालन करूँगा ।' (गीता : १८.७३)

आदमी तब तक स्थिर नहीं होता जब तक उसका संदेह दूर नहीं होता । संदेह तब तक दूर नहीं होता जब तक तत्त्वज्ञान नहीं होता । तत्त्वज्ञान तब तक हजम नहीं होता जब तक एकाग्रता, संयम और साधना नहीं होती ।

यह ब्रह्मविद्या समय पाकर परिपक्व होती है । अधीर व्यक्ति के हृदय में तत्त्वज्ञान प्रतिष्ठित नहीं होता, समय पाकर ही होता है । तत्त्वज्ञान के लिए अभ्यास की जरूरत है और अभ्यास भी कैसा ? तैलधारवत् । यदि ब्रह्मविद्या का अभ्यास तैलधारवत् किया जाये तो जीव जन्म-मरण के दुःखों से पार होकर परम शान्ति को पा लेता है । परम शांति ऐसा सुख है, ऐसी उपलब्धि है कि जिसकी बराबरी किसीके साथ नहीं की जा सकती । जैसे, पृथ्वी का भार और किसके साथ तौला जाये ? सूर्य के प्रकाश की तुलना किस प्रकाश से की जाये ? ऐसे ही संसार में तो क्या पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसकी तुलना आत्मज्ञान के साथ की जा सके ।

जब तक जीव को अपने वास्तविक स्वरूप का बोध नहीं हुआ तब तक कोई भी अवस्था आ जाये किन्तु व्यक्ति पूर्ण निश्चिंत नहीं होता । अपने-आपका बोध हो जाये, अपने आपका पता चल जाये इसे आत्म-साक्षात्कार बोलते हैं ।

यह साक्षात्कार किसी अन्य का नहीं वरन् अपना ही साक्षात्कार है, इसीलिए इसको आत्म-साक्षात्कार कहते हैं । जब तक आत्म-साक्षात्कार नहीं होता तब तक व्यक्ति चाहे तैंतीस करोड़ क्राइस्ट या तैंतीस करोड़ श्रीकृष्ण के बीच रहे फिर भी उसको पूर्ण विश्रान्ति नहीं मिलती ।

आत्म-साक्षात्कार का तात्पर्य क्या है ? भगवान दत्तात्रेय कहते हैं कि नाम-रूप और रंग जहाँ नहीं पहुँचते, ऐसे परब्रह्म में जिसने विश्रान्ति पायी है, वह जीते-जी मुक्त है । नानकजी कहते हैं :

**रूप न रंग न रेख कछु प्रभु त्रेय गुणा ते भिन्न ।**

रूप, रंग, रेख जो कुछ भी है वह स्थूल शरीर में है, मन में है, सूक्ष्म बुद्धि में, संस्कार में हैं । यदि देवी-देवता भी आकर दिख जायें तब भी वे होंगे माया-विशिष्ट चैतन्य में ही । उनसे पूरी विश्रान्ति नहीं मिलेगी । यह स्थूल जगत, सूक्ष्म जगत, जीव जगत और ईश्वर- ये सब हैं माया के ही अन्तर्गत । आत्म-साक्षात्कार है माया से परे । जिसकी सत्ता से ये जीव, जगत, ईश्वर दिखते हैं, उस सत्ता को 'मैं' रूप से ज्यों-का-त्यों अनुभव करना, इसका नाम है आत्म-साक्षात्कार । जीव की हस्ती, जगत की हस्ती और ईश्वर की हस्ती जिसके आधार से दिखती है और जो टिकती नहीं है, बदलती रहती है फिर भी जो अबदल आत्मा है उसे ज्यों-का-त्यों जानना, इसको आत्म-साक्षात्कार कहते हैं ।

हकीकत में जीव का असली स्वरूप ब्रह्म से अलग नहीं है । जैसे, तरंग का असली स्वरूप पानी से भिन्न नहीं है, गहनों का असली स्वरूप सोने से भिन्न नहीं है ऐसे ही हम अपने असली स्वरूप को जान लें, इसका नाम है आत्म-साक्षात्कार । अभी तक हम अपने असली स्वरूप को नहीं देख पाये, इसीलिए कई नकली स्वरूप धारण किये और जो भी नकली स्वरूप मिला उसे ही 'मैं' मान बैठे । जिस जन्म में जैसा सूक्ष्म शरीर

रहा वैसे ही विचार रहे, जिस जन्म में जैसा स्थूल शरीर रहा वैसे ही विचार और वासना रही लेकिन उनके पीछे भटक-भटककर युग बीत गये । कबीरजी कहते हैं :

**भटक मूँआ भेदू बिना पावे कौन उपाय ।**
**खोजत-खोजत युग गये पाव कोस घर आय ॥**

जीवमात्र चाहता है कि मेहनत थोड़ी करूँ और सुख ज्यादा मिले । वह सुख भी कैसा ? वह सुख स्थायी हो, टिकनेवाला हो ।

माँग कब होती है ? जब कोई चीज होती है तभी उसकी माँग होती है । तो अपना-आपा ऐसी ही चीज है जो बिना मेहनत के मिलता है और एकबार मिल जाये तो फिर कभी जाता नहीं । इसीको बोलते हैं आत्म-साक्षात्कार ।

अपने स्वरूप का, अपनी आत्मा का पता चल जाना यह बड़े में बड़ी उपलब्धि है । इसके अतिरिक्त जितनी भी उपलब्धियाँ हैं फिर चाहे सब देवी-देवता ही खुश क्यों न हो जायें, तब भी यात्रा अधूरी ही रहेगी । नरसिंह मेहता ने ठीक ही कहा :

**ज्यां लगी आत्मा तत्त्व चीन्यो नहीं ।**
**त्यां लगी साधना सर्व झूठी ॥**

जब तक आत्म-तत्त्व को नहीं पहचाना तब तक सब साधनाएँ झूठी हैं ।

जब तक आत्मज्ञान नहीं हुआ तब तक सब ऐसे ही है... कोई लोहे की हथकड़ी है तो कोई ताँबे की, कोई पीतल की है तो कोई सोने की लेकिन हैं सब हथकड़ी ही । जन्म चाहे महारानी के गर्भ से हो चाहे दासी के गर्भ से, जन्म तो जन्म ही है । गर्भ में जीव तब तक पड़ता ही रहता है, जब तक उसे अपने स्वरूप की स्वतन्त्रता का बोध नहीं होता ।

पुराणों में, शास्त्रों में भी जिन साधु-संतों की गाथाएँ आती हैं उनमें भी कोई विरला ही तत्त्व को उपलब्ध हुआ बाकी तो ऋद्धि-सिद्धि या साकार भगवत् दर्शन तक पहुँचे । जिसके भाल के भाग्य अत्यंत भले होते हैं उसको ब्रह्मवेत्ता गुरु मिलते हैं और जिसको अत्यंत वैराग्य होता है उसीको समाधि मिलती है अर्थात् उसको समाधान होता है, अपने स्वरूप में विश्रान्ति मिलती है और जिसे अपने स्वरूप में विश्रान्ति मिल जाती है फिर उसका मोह नष्ट हो जाता है ।

**नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...**

श्रीकृष्ण के दर्शन हुए अर्जुन को, फिर भी उसका मोह नहीं गया । उस जमाने में बल, बुद्धि और सामर्थ्य में जितना ऊँचा आदमी हो सकता था वैसा ऊँचा था अर्जुन । उसे श्रीकृष्ण का, साक्षात् नारायण का साथ था, विराट रूप के दर्शन भी किये, किन्तु मोह नष्ट नहीं हुआ । मोह तो तब नष्ट हुआ जब अर्जुन को आत्म-साक्षात्कार हुआ । फिर अर्जुन कहता है :

**नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।**
**स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥**

अपने स्वरूप में संदेह रहता है कि मैं सचमुच चैतन्य स्वरूप, अनंत ब्रह्माण्डों में व्यापक आत्मा हूँ कि नहीं ? यह संदेह आखिरी समय तक रहता है । लेकिन जब अपना पुरुषार्थ होता है और सद्गुरु की कृपा पचती है तब जीवत्व की भ्रांति टूटती है ।

**जीव गया और शिव को पाया...**
**जान लिया हूँ शान्त निरंजन ।**
**लागू मुझे न कोई बंधन ॥**
**यह जगत सारा है नश्वर ।**
**मैं ही शाश्वत एक अनश्वर ॥**
**दीद हैं दो पर दृष्टि एक है ।**
**लघु गुरु में वही एक है ॥**

जैसे देखने के विषय अनेक देखनेवाला एक, सुनने के विषय अनेक सुननेवाला एक, चखने के विषय अनेक चखनेवाला एक, मन के संकल्प-विकल्प अनेक लेकिन मन का दृष्टा एक, बुद्धि के निर्णय अनेक लेकिन उसका अधिष्ठान एक । उस एक को जब 'मैं' रूप में देख लिया, अनंत ब्रह्माण्डों में व्यापक रूप में जिस समय देख लिया वे घड़ियाँ सुहावनी हैं, मंगलकारी हैं । वे ही आत्म-साक्षात्कार की घड़ियाँ हैं ।

एक इंच भी परमात्मा हमसे दूर नहीं है फिर भी आज तक मुलाकात नहीं हुई ।

**पानी बीच मीन पियासी रे,**
**सुन-सुन बतिया आये मोहे हाँसी...**

हम ब्रह्म-परमात्मा में उत्पन्न होते हैं, ब्रह्म-परमात्मा में रहते हैं, परमात्मा में जीते हैं, खाते-पीते हैं, परमात्मा में देखते-सुनते हैं, परमात्मा में बोलते हैं और आज तक परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हुआ । कितना अटपटा मामला है ! इस अटपटे मामले को झटपट समझा नहीं जाता लेकिन जब प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद श्री लीलाशाहजी बापू जैसे कोई ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु मिल जाते हैं तो जन्म-मरण की खटपट मिट जाती है ।

ॐ शांति... ॐ शांति...

# ईश्वरीय-विधान का आदर

**- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू**

एक होता है ऐहिक विधान और दूसरा होता है ईश्वरीय विधान। ऐहिक विधान का निर्माण ऐहिक लोगों द्वारा होता है और इसमें भिन्नता होती है । अलग-अलग राष्ट्र अपने-अपने हिसाब से अपना विधान बनाते हैं ।

ऐहिक विधान बनानेवाले कभी गलती भी कर लेते हैं और अमल करानेवाले भी कई घूस, लांच-रिश्वत ले लेते हैं। ऐहिक विधान का उल्लंघन करनेवाला कई बार बच भी जाता है ।

ईश्वरीय विधान गाँव-गाँव के लिए, राज्य-राज्य के लिए, राष्ट्र-राष्ट्र के लिए अलग नहीं होता । अनंत ब्रह्माण्डों में एक ही ईश्वरीय विधान काम करता है । देवताओं का विधान, दैत्यों का विधान, मनुष्यों का विधान अलग-अलग हो सकता है लेकिन ईश्वरीय विधान अलग नहीं होता। ईश्वरीय विधान के अनुकूल जो चलता है वह ईश्वर की प्रसन्नता पाता है लेकिन ईश्वरीय विधान के विपरीत चलनेवाले को प्रकृति पचा-पचाकर सबक सिखा देती है ।

ऐहिक विधान में छूट-छाट है । उसमें पोल चल जाती है लेकिन ईश्वरीय विधान में पोल नहीं चलती। ईश्वरीय विधान का अनादर करने से आदमी को बहुत सहन करना पड़ता है । हम जब-जब दुःखी होते हैं, अशान्त होते हैं, भयभीत होते हैं तब निश्चित समझ लेना चाहिए कि हमारे द्वारा जाने-अनजाने ईश्वरीय विधान का उल्लंघन हुआ है ।

द्रौपदी के साथ कितना अन्याय हुआ था ! भरी सभा में दुर्योधन ने द्रौपदी को अपनी जाँघ पर बैठने के लिए ललकारा था। कर्ण ने मजाक उड़ाते हुए उसे 'वेश्या' कहा था । दुःशासन ने कौरव वंश के तमाम महानुभावों के सामने द्रौपदी के वस्त्र खींचे, फिर भी किसीने अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठायी। ऐसा घोर अन्याय करनेवालों के प्रति जब पांडव कुछ प्रतिक्रिया करते हैं तो वे ही दुष्ट लोग धर्म की दुहाई देने लगते हैं ।

युद्ध के मैदान में जब कर्ण के रथ का पहिया फँस गया था और वह रथ से नीचे उतरकर पहिया बाहर निकाल रहा था, उस समय अर्जुन द्वारा बाण का निशाना लगाने पर कर्ण धर्म की दुहाई देते हुए कहता है :

''यह धर्मयुद्ध नहीं है । मैं निःशस्त्र हूँ और तुम मेरे पर निशाना साध रहे हो ?''

तब श्रीकृष्ण ने कहा : ''जब कौरवों के राजभवन में द्रौपदी के केश खींचे जा रहे थे, उसकी निर्भर्त्सना हो रही थी, तब कहाँ गया था तेरा धर्म ? अब यहाँ धर्म की दुहाई दे रहा है ?''

कभी-कभी तो लुच्चे राक्षस भी आपत्तिकाल में धर्म की दुहाई देने लग जाते हैं। आपत्तिकाल में धर्म की दुहाई देकर अपना बचाव करना, यह कोई धर्म के अनुकूल बात नहीं है । आपत्तिकाल में भी अपने धर्म में लगे रहना चाहिए, ईश्वरीय विधान के अनुसार चलना चाहिए और ईश्वरीय विधान यही है कि तुम्हारी तरक्की होनी चाहिए, जीवन में उन्नति होनी चाहिए ।

यदि आप ईमानदारी से, सजग होकर तरक्की करते हैं तो ईश्वरीय विधान आपकी मदद करता है और यदि आप उन्नति से मुँह मोड़ते हैं तो बड़ी हानि होती है । कालचक्र कभी रुकता नहीं है । पेड़-पौधे, पशु-पक्षी में भी तरक्की है । ये सब भी तरक्की करते-करते मानव देह में आते हैं । जब मानव देह मिल गई, बुद्धि मिल गई, फिर भी आप विकसित नहीं हुए तो ईश्वरीय विधान आपको फिर से चौरासी लाख योनियों में ढकेल देता है ।

भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे लोग

भी जब अधर्म के पक्ष में होते हैं तो ईश्वरीय विधान उनको भी युद्ध के मैदान में ठिकाने लगा देता है ।

कोई सोच सकता है : 'भगवान श्रीकृष्ण तो आये थे धर्म की स्थापना करने के लिए और इतने सारे लोग मारे गये ! सारे कौरव मारे गये ! अठारह अक्षौहिणी सेना खत्म हो गयी ! यह तो अधर्म हुआ...'

नहीं, अधर्म नहीं हुआ । लगता तो है अधर्म हुआ लेकिन धर्म की स्थापना हुई । यदि दुर्योधन नहीं मरता, उसकी पीठ ठोकनेवाले नहीं मरते और दुर्योधन जीत जाता तो अधर्म की जीत होती और धर्म का नाश हो जाता । भगवान श्रीकृष्ण ने अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना की । धर्म के अनुसार, ईश्वरीय विधान के अनुसार जीव की उन्नति में ही कल्याण है ।

जीव की उन्नति का अवरोधक है जीव का इन्द्रियों की ओर खिंचाव, विषय-विकारों की तरफ उसका आकर्षण । जीव की तरक्की है धर्म, नियम और संयम में । 'यह करना... यह नहीं करना... इसका उपयोग करना... इसका उपयोग नहीं करना...' इस प्रकार के नियंत्रण करके जीव को संयमी बनाकर, अपने शिवस्वरूप में जगाने का विधान ही ईश्वरीय विधान है ।

ईश्वरीय विधान का अल्लंघन करके ज्यों-ज्यों आदमी इन्द्रियों को पोसता है, अहंकार को पोसता है, किसीका शोषण करता है तो अशान्त और भयभीत रहता है और मरने के बाद भी घटीयंत्र की नाईं जन्म-मरण के चक्र में फँसता है और दुःख सहता है । लेकिन ज्यों-ज्यों आदमी सीधे ढंग से, ईश्वरीय स्वभाव, ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय शांति की ओर चलने लगता है त्यों-त्यों उसका जीवन सहज और सरल हो जाता है ।

सख्खर में विलायतराय नामक एक संत हो गये । वे सीधा-सादा गृहस्थ जीवन बिताते थे । गृहस्थ होते हुए भी ईश्वरीय विधान का पालन करते थे ।

लीलाराम नाम के एक मुनीम पर पैसे की लेन-देन में हेरा-फेरी के गुनाह में अदालत में मुकदमा चल रहा था । लीलाराम बहुत घबड़ाया और विलायतराय के चरणों में आकर खूब रोया तथा बोला :

''महाराज ! मैं आपकी शरण आया हूँ । मुझे बचाओ । मैं दुबारा गलती नहीं करूँगा । न्यायाधीश सजा करके जेल में भेज दे उसकी अपेक्षा आप मुझे जो सजा देंगे, मैं स्वीकार कर लूँगा ।''

संत विलायतराय का हृदय पिघल गया । वे बोले : ''अच्छा ! अब तू अपना केस रख दे उस शहनशाह परमात्मा पर । उन शहनशाह पर विश्वास रख । जिसके विधान का तूने उल्लंघन किया उसीकी शरण हो जा ।''

लीलाराम ने गुरु की बात मान ली । बस, जब देखो तब 'शहनशाह... शहनशाह... ।' उसका मन शहनशाह में तदाकार हो गया ।

लीलाराम मुकदमे के दिन पहुँचा अदालत में, तब न्यायाधीश ने पूछा :

''तुमने कितने पैसों का गोलमाल किया है ? सब सच-सच बता दो ।''

लीलाराम : ''शहनशाह ।''

''तेरा नाम क्या है ?''

''शहनशाह ।''

''ऐसा क्यों किया ?''

''शहनशाह ।''

सरकारी वकील ने खूब पूछताछ की लेकिन जवाब एक ही आता था :

''शहनशाह ।''

''यह अदालत है । ढोंग मत कर, नहीं तो तेरी खाल खींच लेंगे ।'' ''शहनशाह ।''

अनेक भय दिखाए लेकिन कोई फर्क नहीं । ईश्वरीय विधान : **'मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यम्'** में वह एकदम तदाकार हो गया... ध्यानस्थ हो गया ।

लीलाराम को हथकड़ी पहनाकर सजा फरमाने की तैयारी की गयी लेकिन उस वक्त भी लीलाराम के मुख पर शोक न था । वह तो बस, 'शहनशाह... शहनशाह...' की रट लगाये था ।

जैसे अंतिम समय पर राष्ट्रपति का संदेश आ जाता है और सजा रुक जाती है वैसे ही परमात्मा की प्रेरणा से न्यायाधीश के मन में भी विचार आया कि 'इतना अपमान करते हैं, इतनी गालियाँ देते हैं, सिपाही इतना तोछड़ा व्यवहार करते हैं फिर भी इसको कुछ

असर नहीं होता ?' न्यायाधीश ने कहा : ''कहाँ से पकड़ लाये इस पागल को ? यह केस रद है ।''

लीलाराम छूट गया और आया विलायतराय के चरणों में । विलायतराय ने पूछा : ''छूट गया केस से, बेटा ?''

लीलाराम : ''शहनशाह ।''

''भूख लगी है ?''

''शहनशाह ।''

गुरु ने देखा कि बिल्कुल सच्चाई से मेरे वचन लिये हैं... यह देखकर उनका हृदय प्रसन्न हो गया । उन्होंने अपने संकल्प से 'शहनशाह' के भाव का नियंत्रण कर दिया : ''अच्छा ! जब जरूर पड़े तब बोलना-शहनशाह ।''

फिर तो वह लीलाराम गुरु के आश्रम में ही रहने लगा ।

अब लीलाराम से कोई कहे कि 'पेट में दर्द है' तो वह पेट पर हाथ घुमाकर कह देता : 'शहनशाह' तो पेट का दर्द गायब हो जाता । कोई कहता कि 'धन्धा नहीं चलता है ।' लीलाराम एक थप्पड़ मार देता और कहता : 'शहनशाह' तो उसका धन्धा-रोजगार चलने लगता ।

धीरे-धीरे लोगों की भीड़ बढ़ने लगी । इधर लीलाराम को अपनी सफलता का अभिमान आ गया ।

ईश्वरीय विधान पर चलने से कीर्ति तो मिलती है लेकिन कीर्ति में फँसना नहीं चाहिए, उससे भी आगे की उन्नति की ओर बढ़ना चाहिए । लीलाराम की मति बिगड़ी । लोगों का काम बन जाता तो वे लीलाराम के लिए कुछ-न-कुछ चीज-वस्तुएँ लाने लगे । धीरे-धीरे लीलाराम नीचे गिरा और शराबी-कबाबी हो गया । इससे विलायतराय के हृदय को ठेस पहुँची ।

गुरु ईलाज तो बताते हैं, प्राणायाम आदि सिखाते हैं, आशीर्वाद देते हैं । उनमें जिसकी श्रद्धा होती है वह तो उन्नति की राह पर चल पड़ता है लेकिन जिसकी श्रद्धा इतनी न हो, अभिमान आ जाये तो वह वहीं-का-वहीं रह जाता है । शिष्य गुरु की आज्ञा मानकर चलता है तो गुरु का चित्त प्रसन्न हो जाता है और गुरु के चित्त की प्रसन्नता से शक्तियाँ विकसित होने लगती हैं । किन्तु उन शक्तियों का अभिमान आ जाने से गुरु के चित्त को अगर क्षोभ हो जाए तो शिष्य का अवश्य ही अमंगल होता है ।

एक दिन विलायतराय कहीं जा रहे थे । रास्ते में ही लीलाराम की कुटिया आती थी । दो-पाँच शिष्य भी साथ में थे । उन्होंने लीलाराम को भी साथ में ले लिया । मार्ग में नदी आने पर विलायतरायजी ने कहा : ''अब हम नदी में स्नान करेंगे ।''

सेवक ने साबुन व लोटा दिया । विलायतरायजी ने स्नान करते करते लीलाराम से कहा : ''तू भी गोता मार ले ।''

लीलाराम जैसे ही गोता मारकर बाहर निकलता है तो क्या देखता है कि खुद लीलाराम में से लीलाबाई बन गया ! आसपास न नदी है, न गुरुजी हैं, न कोई गुरुभाई है । अकेली सुंदरी लीलाबाई रह गई... ! लीलाराम बहुत शरमिंदा हो गया कि 'मैं लीलाराम...! 'शहनशाह' कहनेवाला... आज क्या बन गया हूँ !'

उसी समय वहाँ चार चाण्डाल आये और पूछने लगे : ''क्योंरी ! इधर बैठी है अकेली ?''

अब वह कैसे बोले कि 'मैं लीलाराम हूँ ।' यह तो संत विलायतरायजी का चमत्कार था । जैसे श्रीकृष्ण ने नारदजी को नारदी बना दिया था, ऐसे ही उन्होंने लीलाराम में से लीलाबाई बना दिया ।

चारों चाण्डाल आपस में झगड़ा करने लगे लीलाबाई के साथ शादी करने के लिए । आखिर चारों में से जो ज्यादा बलवान था, उसके साथ लीलाबाई का गांधर्व विवाह हो गया ।

समय बीता । लीलाबाई को तीन बेटे हुए, तीन बेटियाँ हुईं । बेटियों की शादी चाण्डालों के घर में हुई । परिवार बढ़ता गया... । सुख-दुःख के प्रसंग आते-जाते रहे । लीलाबाई साठ साल की बूढ़ी हो गयी । बहुत सारे दुःख भोगे । पति मर गया तो वह अपना सिर कूटने लगी :

'हाय राम ! मैं विधवा हो गयी । हे भगवान् ! मैं क्या करूँ ? तुम मुझे भी अपने पास बुला लो...'

ऐसा करते-करते जैसे ही आँख खोली तो वही नदी और वही स्नान ! गुरुजी, गुरुभाई सब उपस्थित

थे । लीलाराम चकित हो गया कि 'मैं लीलाबाई बन गया था, मेरे इतने बेटे-बेटियाँ हुए, साठ साल का चाण्डाली का जीवन देखा, मेरा चाण्डाल पति मर गया... और यहाँ तो अभी स्नान भी पूरा नहीं हुआ है ! यह सब क्या है ?

विलायतराय मुस्कुराते हुए बोले :

''देख ! शूली में से काँटा हो गया । तेरा चाण्डाल होने का प्रारब्ध तो कट गया, तेरी पहले की गयी भक्ति से, पश्चात्ताप से । लेकिन अब तेरे पास पहले जैसी शक्ति नहीं रहेगी । वैद्य का धन्धा करके अपना गुजारा करते रहना । आज के बाद मुझे मुँह मत दिखाना ।''

ईश्वरीय विधान का हम आदर करते हैं तो उन्नति होती है और अनादर करते हैं तो अवनति होती है । ईश्वरीय विधान का आदर यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है वह सब हमारा व्यक्तिगत नहीं है । सब उस जगन्नियंता का है लेकिन जब हम 'हमारा है... हमारे लिये है' ऐसा मानने लगते हैं, तब ईश्वरीय विधान का अनादर करते हैं । फलस्वरूप दण्ड के रूप में दुःख, चिन्ता, क्लेश शुरू हो जाते हैं ।

बाह्य वस्तुओं से अगर कोई सुखी होना चाहता है तो समझो कि तिनखों के ढेर को जलाकर, होली जलाकर उससे ठंडक पाना चाहता है अथवा तो आग को पेट्रोल के फुहारे से बुझाना चाहता है । बाह्य वस्तुओं से आज तक कोई भी न तो पूर्ण सुखी हुआ है और न होगा । यदि मनुष्य ने पूर्ण सुख पाया है तो वह केवल अपने अंतरात्मदेव में विश्रांति पाकर ही... और अंतरात्मा में विश्रांति पायी जा सकती है केवल ईश्वरीय विधान का आदर करके ही ।

मुझे एक बड़े अधिकारी ने बताया : ''एक संत के लिए षडयंत्र रचनेवाले कुछ लोगों में एक पुलिस अधिकारी (D.S.P.) का विशेष योगदान था और अन्ततः वह D.S.P. गोधरा (पंचमहाल, गुजरात) के जंगलों में बंदूकधारी अंगरक्षकों के होते हुए भी एक बघेड़े का (चित्ते का) शिकार हो गया ।''

एक संत पर मिथ्या आरोप लगाने में क्रूर भूमिका अदा करनेवाली उस टुकड़ी के D.S.P. को जंगल में बघेड़े से बचाने के लिए अंगरक्षक ने गोली चलायी लेकिन गोली बघेड़े को न लगी और बघेड़े का शिकार हो गया वह D.S.P.

मुझे बताया गया : ''बापूजी ! अब उसे बघेड़ा बनना पड़ेगा क्योंकि मरते समय बघेड़े का चिंतन करते हुए मरा है । जंगलों में भटकेगा, जंगली प्राणियों का चिन्तन करता मरेगा और कई दुष्ट योनियों में जायेगा ।''

अतः कर्म करने में मनुष्य यदि ईश्वरीय विधान का अनादर कर क्रूरता करता है तो कुदरत भी उसे देर-सबेर नीच गति में धकेलकर क्रूरता का मजा चखाती है ।

अतः सावधान ! अपने से ऐसे कर्म न हों जिसमें ईश्वरीय विधान का अनादर हो और हमें जंगली जानवर अथवा पेड़-पोधे बनकर सूख-सूखकर मरना पड़े ।

---

(पृष्ठ ८ का शेष)

महापुरुष अपनी आत्मशक्ति से लोगों का मन भगवान में लगा देते हैं । कीर्तन कराते-कराते संप्रेक्षण शक्ति बरसाकर लोगों की सुषुप्त शक्तियाँ जगा देते हैं । महापुरुष ऐसे होते हैं । नानकजी कहते हैं :

**ब्रह्मज्ञानी का दर्शन बड़भागी पावहि ।**
**ब्रह्मज्ञानी को बलि-बलि जावहि ॥**

सच्चे संतों के नेत्रों से आध्यात्मिक ऊर्जा निकलती रहती है जो हमारे पाप-ताप मिटाती है । सच्चे संतों की वाणी से हमारे कान पवित्र होते हैं, हमारा आत्मिक बल जगता है ।

पहले के समय में बड़े-बड़े राजा-महाराजा बारह-बारह कोस दूर तक रथ में जाते थे महापुरुषों के श्रीचरणों में मस्तक नवाने के लिए । संतों-महापुरुषों में जिसकी श्रद्धा नहीं है उसे समझना कि या तो वह शोषक है या उसके मन में कोई बड़ा पाप है इसलिए उसके हृदय में महापुरुषों के लिए नफरत है । अगर महापुरुषों के लिए नफरत है तो वह व्यक्ति नरकगामी होगा । सच्चे संतों के प्रति किसीको नफरत है तो समझ लेना कि उसके ऊपर कुदरत का कोप होगा । सच्चे संतों के प्रति जिनको श्रद्धा है तो समझ लेना कि देर-सबेर उनके हृदय में भगवान प्रगट होनेवाले हैं ।

**नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा ।**
**स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवत् ॥**
(चरक संहिता)

जैसे नगरपति नगर के योगक्षेम और वाहन चालक वाहन की सुरक्षा और सही राह पर चलाने के प्रति सदैव सतर्क रहता है वैसे ही मेधावी व्यक्ति अपने शरीररूपी नगर और जीवन की यात्रा करानेवाले वाहन की देख-रेख और सुरक्षा करने तथा इसे सही राह पर चलाने के प्रति सतर्क और सचेष्ट रहता है ।

## शरीर की अमूल्य निधि : आँख

आजकल किशोर अवस्था में ही नजर कमजोर होने से बच्चों को चश्मा लग जाता है । कारण है सिर्फ असंतुलित आहार, ब्रह्मचर्य का पालन न करना एवं उचित पोषक तत्त्वों का अभाव । कुछ बच्चों में यह बीमारी वंशानुगत भी पायी जाती है । आजकल तो दूरदर्शन के साथ-साथ Zee T.V., M.T.V. आदि की बीमारी बच्चों को ऐसी लगी है कि बस, जब देखो तब T.V. के सामने । फलस्वरूप पढ़ाई में मन नहीं लगता । देर रात तक जगने व सुबह देरी से उठने से पाचन तंत्र अव्यवस्थित होना, बुद्धि शक्ति का मंद होना, सिर दर्द आदि रोग तो होते ही हैं, साथ ही अधिक T.V. देखने से उसमें से निकलनेवाली हानिकारक किरणों से आँखों पर ऐसा खराब असर होता है कि परिणामतः चश्मा लगवाना पड़ता है । अतः अपने ही हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मारो । थोड़ा विवेक से काम लो । आँखों की सुरक्षा के लिये उचित देखभाल व आहार-विहार पर ध्यान दो ।

## सावधानियाँ

१. सुबह सूर्योदय से पहले शय्या का त्याग कर दो । शीतल जल से कुल्ला करके चेहरे को धो लो । तदुपरांत मुँह में पानी भरकर आँखों पर शीतल जल के छींटे मारो । इससे आँखों को शीतलता मिलती है । जलन शांत होती है । नेत्ररोग दूर करने में मदद मिलती है ।

२. प्रभातकाल में स्वच्छ वातावरण में घूमना एवं हरियाली देखना भी नेत्रज्योति में वृद्धि करता है ।

३. सुबह-सुबह हरी-हरी घास पर नंगे पैर घूमने से भी आँखों को फायदा होता है ।

४. शहरों में मोटर गाड़ियों के विषाक्त धुएँ, धूल एवं तेज रोशनी से आँखों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है । अतः जितना सम्भव हो इससे बचो । ऐसे वातावरण में से आने के बाद स्वच्छ शीतल जल से आँखों को धोकर ठण्डी पट्टी आँखों पर रखकर थोड़ी देर लेट जाओ ।

५. देर रात तक जगने एवं सुबह सूर्योदय के बाद उठने से आँखों में गर्मी बढ़ जाती है । आँखों में रूखापन, सूनापन आ जाता है । सौम्यता गायब हो जाती है ।

६. आँखों से तेज हवा का सीधा टकराना, मल-मूत्र, छींक, जम्भाई एवं अधोवायु आदि के वेग को बलपूर्वक रोकना, ऋतु के अनुकूल आहार-विहार न करना, भोग-विलास में अतिशयता करना... ये सब शरीर के सर्वाधिक कोमल एवं संवेदनशील अंग आँख को बहुत ज्यादा हानि पहुँचाते हैं । अतः इन सबसे बचो ।

## नेत्रज्योति को बढ़ाने के अन्य उपाय

१. त्रिफला चूर्ण को रात्रि में पानी में भिगोकर सुबह साफ कपड़े में छानकर उस पानी से आँख धोने से नेत्रज्योति बढ़ती है ।

२. जलनेति करने से भी नेत्रज्योति बढ़ती है । इससे आँख, नाक, कान के समस्त रोग मिट जाते हैं । आश्रम से प्रकाशित 'योगासन' पुस्तक में कई प्रकार के रोग आसनों द्वारा मिटाने के लिए एवं आँखों

के लिए जलनेति का संपूर्ण विवरण दिया गया है ।

३. एक चम्मच ताजा मक्खन, आधा चम्मच पिसी मिश्री, थोड़ी-सी पिसी कालीमिर्च मिलाकर चाट लो । तत्पश्चात् सफेद नारियल के २-३ टुकड़े खूब चबा-चबाकर खा लो । ये सभी द्रव्य बहुत पौष्टिक होने से नेत्रज्योति में वृद्धि होती है ।

४. तेज मिर्च-मसालेदार पदार्थ, उष्ण प्रकृति के पदार्थ, खटाई आदि आँखों को नुकसान पहुँचाते हैं । अत: इनका सेवन यदा-कदा अल्प मात्रा में ही करो ।

५. पैरों के तलवों व अगूठे पर सोम, बुध और शनिवार के दिन सरसों के तेल की मालिश करने से नेत्रज्योति बढ़ती है एवं आँखों के रोग नहीं होते हैं ।

## आँखों के अन्य रोग एवं निदान

❀ बेलपत्र का रस पीने से और आँखों में आँजने से रतौंधी रोग में आराम होता है ।

❀ हल्दी एवं लौंग को पानी में घिसकर थोड़ा-सा गर्म करके पलकों पर लगाने से गुहेरी (अंजनी) दो-तीन दिन में मिट जाती है ।

❀ सौ ग्राम पानी में एक नीबू का रस डालकर आँख धोने से कचरा निकल जाता है ।

❀ रात्रि को आँवला चूर्ण खाने से, हरियाली देखने से तथा कड़ी धूप से बचने से आँखों की सुरक्षा होती है ।

## तुलसी का काढ़ा

तुलसी के १०-१२ पत्ते, ३-४ कालीमिर्च, चुटकी भर सौंठ का चूर्ण, चुटकी भर सैन्धा नमक, इन सबको एक गिलास पानी (लगभग २५० मि. ली.) में डालकर उबालो । जब पानी आधा रह जाय तब उतारकर छान लो । रात को यह काढ़ा पीकर सो जाओ । इसके सेवन के आधा घंटे तक पानी न पियो ।

यह काढ़ा सर्दी, जुकाम, मलेरिया, टांसिल्स आदि रोगों को दूर करने में बहुत ही गुणकारी है । इन रोगों के कारण हाथ-पैर में होनेवाले दर्द को भी यह दूर करता है । खाँसी एवं गले की खिंचखिंच (खराश) में भी लाभप्रद है ।

## सर्प-दंश चिकित्सा

सर्प के काटने पर शीघ्र ही तुलसी का सेवन करने से जहर उतर जाता है एवं प्राणों की रक्षा होती है । तुलसी के ५०-६० पत्ते खिलाने से विष का फैलना रुक जाता है । इसकी जड़ को मक्खन के साथ पत्थर पर घिसकर लेप बनाकर सर्प के काटे हुए स्थान पर लगाओ । विशेष बात यह कि लगाते समय इस लेप का रंग सफेद होता है और जैसे-जैसे यह लेप जहर खींचता है वैसे-वैसे यह लेप काला पड़ता जाता है । लेप का रंग काला होते ही इसे हटाकर दूसरा लेप लगा देना चाहिये । ऐसा तब तक करो जब तक लेप का रंग काला होना बंद न हो जाय ।

यदि सर्प का काटा हुआ व्यक्ति बेहोश हो जाय तो तुलसी के पत्तों का रस, कपाल, गले, पीठ और छाती पर लगाकर मालिश करना चाहिये । रस की दो-दो बूँद कान एवं नाक में थोड़े-थोड़े समय के अन्तराल से टपकाते रहना चाहिये । रोगी होश में आने पर तुलसी का रस पिला देना चाहिये ।

## विविध प्रयोग

**मुँहासों के दाग :** तुलसी के पत्तों को पीसकर लुगदी बनाकर मुँह पर लगाने से मुँहासों के दाग धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं ।

**मुँहासे :** एक कप दूध को खूब उबालो । जब दूध गाढ़ा हो जाय तब उसे नीचे उतार लो । उसमें एक नीबू निचोड़ दो । साथ ही हिलाते रहो जिससे दूध व नीबू का रस एक हो जाय । फिर ठण्डा होने के लिये रख दो । रात को सोते समय इसे चेहरे पर लगाकर मसलो । चाहो तो एक-डेढ़ घण्टे के अन्दर चेहरा धो सकते हो या रात भर ऐसे ही रहने दो । सुबह में धो सकते हो । इस प्रयोग से मुँहासे ठीक होते हैं । चेहरे की त्वचा कांतिमय बनती है ।

**पेटदर्द :** वायुप्रकोप के कारण पेट फूलने से एवं अधोवायु के न निकलने से पेट का तनाव बढ़ता है जिससे बहुत पीड़ा होती है । चला भी नहीं जाता है । अत: अजवायन एवं काला नमक दोनों को पीसकर समान मात्रा में मिलाकर रख लो । इस मिश्रण को एक चम्मच मात्रा में गर्म पानी के साथ फांकने से अधोवायु निकल जाती है । साथ ही पेट का तनाव व दर्द भी मिट जाता है ।

**आधे सिर का दर्द (आधासीसी) :** (१) गाय का शुद्ध ताजा घी सुबह शाम दो-दो बूँद नाक में टपकाने से दर्द में लाभ होता है ।

(२) सिर के जिस तरफ के भाग में दर्द हो उस तरफ के नथुने में चार-पाँच बूँद सरसों का तेल डालने से दर्द बंद हो जाता है ।

**मुँह के छाले :** (१) छाले कब्जियत एवं जीर्णज्वर के कारण होते हैं । अत: रात को भोजन के पश्चात् एक-दो हरड़ चूसो । इससे आमाशय व अन्तड़ियों के दोषों के कारण महीनों तक ठीक न होनेवाले मुँह के छाले जल्दी ठीक हो जाते हैं ।

(२) सुबह ८-१० तुलसी के पत्ते खाकर ऊपर से पानी पियो । इससे भी फायदा होता है ।

(३) सुहागा, शहद मिलाकर छालों पर लगाने से, मुलहठी का चूर्ण चूसने से छालों में लाभ होता है ।

(४) जिसे मुँह के छाले बार-बार होते हों उसे टमाटर अधिक खाना चाहिये ।

## 'ऋषि प्रसाद' के पाठकगण, सदस्यों एवं एजेन्ट बन्धुओं से निवेदन

(१) 'ऋषि प्रसाद' के गतांकों में दी गई सूचना के अनुसार सर्वविदित है कि अप्रैल '९६ से 'ऋषि प्रसाद' कीं द्विमासिक सदस्यता योजना समाप्त कर दी गई है । अत: जो आजीवन सदस्य सिर्फ द्विमासिक पत्रिका ही प्राप्त कर रहे थे उनसे निवेदन है कि वे कृपया अतिरिक्त रू. २५० जमा करवाकर अपनी सदस्यता को मासिक आजीवन सदस्यता में परिवर्तित करवा लें ।

(२) 'ऋषि प्रसाद' के पाठक इस अंक से रू. २०० जमा करवाकर पाँच साल के लिए भी सदस्य बन सकते हैं ।

(३) अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराते समय मनीऑर्डर फार्म पर 'संदेश के स्थान' पर 'ऋषि प्रसाद' के लिफाफे पर आया हुआ आपके पते वाला लेबल चिपका दें । (४) 'पाने वाले का पता' में 'ऋषि प्रसाद सदस्यता हेतु' अवश्य लिखें । (५) पते में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सूचना प्रकाशन तिथि से एक माह पूर्व भिजवावें अन्यथा परिवर्तन अगले अंक से प्रभावी होगा । (६) जिन सदस्यों को पोस्ट द्वारा अंक मिलता है उनको विनंती है कि अगर आपको अंक समय पर प्राप्त न हो तो पहले अपनी नजदीकवाली पोस्ट ऑफिस में ही पूछताछ करें । क्योंकि अहमदाबाद कार्यालय से सभी को समय पर ही अंक पोस्ट किये जाते हैं । पोस्ट ऑफिस में तलास करने पर भी अंक न मिले तो उस महीने की २० तारीख के बाद अहमदाबाद कार्यालय को जानकारी दें । (७) 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय कार्यालय के पते के ऊपर के स्थान में संबंधित विभाग का नाम अवश्य लिखें । ये विभिन्न विभाग इस प्रकार हैं :

**(A)** अनुभव, गीत, कविता, भजन, संस्था समाचार, फोटोग्राफ्स एवं अन्य प्रकाशन योग्य सामग्री 'सम्पादक- ऋषि प्रसाद' के पते पर प्रेषित करें । **(B)** पत्रिका न मिलने तथा पते में परिवर्तन हेतु 'व्यवस्थापक-ऋषि प्रसाद' के पते पर संपर्क करें । **(C)** साहित्य, चूर्ण, कैसेट आदि प्राप्ति हेतु 'श्री योग वेदान्त सेवा समिति के पते पर संपर्क करें । **(D)** साधना संबंधी मार्गदर्शन हेतु 'साधक विभाग' पर लिखें । **(E)** स्थानीय समिति की मासिक रिपोर्ट, सत्प्रवृत्ति संचालन की जानकारी एवं समिति से संबंधित समस्त कार्यों के लिये 'अखिल भारतीय योग वेदान्त सेवा समिति' के पते पर लिखें । **(F)** स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त प्रकार के पत्रव्यवहार 'वैद्यराज, सांई लीलाशाहजी उपचार केन्द्र, संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहाँगीरपुरा, सूरत (गुजरात) के पते पर करें । (८) आप जो राशि भेजें वह इन विभागों के गुताबिक अलग-अलग मनीऑर्डर या ड्राफ्ट से ही भेजें । अलग-अलग विभाग की राशि एक ही मनीऑर्डर या ड्राफ्ट में कभी न भेजें ।

## आजीवन सदस्य बनकर उपहार प्राप्त करें

'ऋषि प्रसाद' के नये बननेवाले सभी आजीवन सदस्यों को पू. बापू की अमृतवाणी की एक आडियो कैसेट भेंट में दी जाएगी ।

## 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की एजेन्सी हेतु जानकारी

यदि आप अपने गाँव अथवा शहर में 'ऋषि प्रसाद' का वितरण-विक्रय करके पू. बापू के सत्संग-प्रसाद का लाभ जन-जन तक पहुँचाने के इच्छुक हों तो कमिशन एवं विक्रय की शर्तों आदि की जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें : प्रचार-प्रसार विभाग, 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय, श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

३ गुरुभक्त उपमन्यु
कुछ समय के बाद उपमन्यु को पूर्ववत् हृष्टपुष्ट देखकर गुरु ने पूछा :
''बेटा उपमन्यु ! आजकल तुम क्या खाते हो ?''
''गुरुदेव ! पहली भिक्षा माँगकर मैं आपको अर्पण कर देता हूँ। फिर दुबारा जाकर भिक्षा माँगकर उससे अपनी क्षुधा निवृत्त करता हूँ।''
''यह भिक्षा धर्म के विरुद्ध है। उससे गृहस्थों पर बोझा पड़ेगा और दूसरे भिक्षा माँगनेवालों को भी संकोच होगा। अतः आज से दुबारा भिक्षा मत माँगना।''
''जो आज्ञा भगवन् !''
गुरुआज्ञा को शिरोधार्य करके उपमन्यु ने दुबारा भिक्षा माँगना छोड़ दिया। कुछ दिनों के बाद :
''उपमन्यु ! अब तुम क्या खाते हो ?''
''अब मैं केवल गौओं का दूध पीकर रहता हूँ।''
''यह तुम बड़ा अनर्थ कर रहे हो। मेरे से बिना पूछे तुम्हें आश्रम की गौओं का दूध नहीं पीना चाहिए। आज से गौओं का दूध मत पीना।''
''जी, बहुत अच्छा।''
उपमन्यु ने गुरु की बात मानकर दूध पीना भी छोड़ दिया। थोड़े दिनों के बाद गुरु ने फिर उपमन्यु को हृष्टपुष्ट देखा और पूछा :
''बेटा ! तुम दुबारा भिक्षा भी नहीं लाते, गौओं का दूध भी नहीं पीते फिर भी तुम्हारा शरीर ज्यों-का-त्यों बना है ! तुम क्या खाते हो ?''
''गुरुदेव ! मैं बछड़ों के मुख में से गिरनेवाले फेन को पीकर अपनी भूख मिटाता हूँ।''
'' देखो ! यह तुम ठीक नहीं करते। बछड़े दयावश तुम्हारे लिए अधिक फेन गिराते होंगे। तुम बछड़ों का फेन भी मत पिया करो।''
''जो आज्ञा।''
ऋग्वेद
उपमन्यु ने इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और उस दिन से फेन पीना भी छोड़ दिया।

अब उपमन्यु उपवास करने लगा। प्रतिदिन उपवास करता और गौओं
गुरुभक्त उपमन्यु
४
के पीछे घूमता। एक दिन भूख से व्याकुल होकर उसने भूल से आक के पत्ते खा लिए। फलतः उसकी आँखों की रोशनी चली गई। उसे दिखाई देना बंद हो गया।
ऐसी अवस्था में भी वह गायों के पीछे धीरे-धीरे आवाज के सहारे चलने लगा। रास्ते में एक कुआँ था। दिखाई न देने के कारण वह कुएँ में गिर पड़ा।
शाम हुई। गायें आश्रम में लौटीं। शिष्य के कल्याण के लिए, उसके जीवन को घड़ने के लिए बाहर तो वज्र से भी कठोर दिखनेवाले और भीतर से फूल से भी कोमल कृपालु गुरुदेव ने आश्रम में लौटी हुई गायों के साथ उपमन्यु को न देखकर उन्हें चिन्ता हुई। अपने दूसरे शिष्यों से उन्होंने कहा :
''उपमन्यु अभी तक लौटकर नहीं आया ? गौएँ तो लौटकर आ गयीं ! मालूम होता है, बहुत कष्ट सहते-सहते वह दुःखी होकर भूख के कारण कहीं भाग गया। चलो, जंगल में चलकर उसे ढूँढें।''
(क्रमशः)

# गुरुदेव के दिये हुए गुरुमंत्र का अमोघ प्रभाव

आत्मारामी संत पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से ही मुझे पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई । उसका नाम नारायण रखा । पूरे परिवार में एक खुशी की लहर दौड़ गई। मैंने मन ही मन पूज्य गुरुदेव की पूजा-अर्चना की । मैं खुशी से फूली न समा रही थी ।

मैंने सुना था कि कोई आत्मवेत्ता संत अपनी आत्मानंद की मस्ती में गोता लगाकर जो बोल देते हैं वह पत्थर पर लकीर हो जाता है । पूज्य बापूजी के द्वारा पुत्रप्राप्ति के लिये दिये गये प्रसाद के एक साल बाद मैं पूज्य गुरुदेव की कृपा को नवजात शिशु के रूप में प्रत्यक्ष देख रही थी ।

*कोई आत्मवेत्ता संत अपनी आत्मानंद की मस्ती में गोता लगाकर जो बोल देते हैं वह पत्थर पर लकीर हो जाता है ।*

लेकिन सब दिन एक-से नहीं रहते ।

कुछ दिन बीते कि अचानक दिनांक : २४-७-९६ को नारायण का स्वास्थ्य बिगड़ा । उसको अस्पताल में दाखिल किया । डॉक्टर ने सभी परीक्षण करके बताया कि आपके पुत्र को जहरी मलेरिया हो गया है ।

डाक्टर ने तत्काल दवा व इंजेक्शन आदि से उसका उपचार आरम्भ किया लेकिन जैसे-जैसे समय गुजरता जा रहा था वैसे-वैसे उसकी तबियत बिगड़ती ही जा रही थी । डाक्टर ने आशा छोड़ दी थी, फिर भी प्रयत्न चालू रखा था ।

नारायण के मस्तिष्क में मलेरिया का बुरा असर हो चुका था । सारे शरीर में तनाव शुरू हो गया । पूरा शरीर अकड़ गया । नाड़ी की धड़कनें एकाएक बढ़ गयीं । मुँह से झाग आना शुरू हो गया । फिर एकाएक उसका शरीर ठंडा हो गया । हृदय की धड़कनें बंद-सी हो गयीं । शरीर निस्तेज हो गया । गर्दन एक और झुक गयी । मैं फफककर रो पड़ी । मैं उस विधि के विधान के आगे कर भी क्या सकती थी ? अब सिर्फ एक ही रास्ता था ।

मैंने उस निस्तेज शरीर के सामने बैठकर गुरुमंत्र का जप शुरू कर दिया । दृढ़ संकल्प किया कि मेरा बच्चा ठीक हो जायेगा तो श्रीआसारामायण का पाठ करूँगी । दूसरी तरफ मेरी बेटी ने श्रीमद्भगवद्गीता के १८ वें अध्याय का पाठ प्रारंभ कर दिया था। पाठ पूरा होते ही उसने गुरुमंत्र का जप शुरू किया व सामने कटोरी में रखे पानी में निहारा। फिर वही पानी गुरुमंत्र का जप करते-करते नारायण पर छाँटा ।

आश्चर्य !

बच्चे के शरीर में थोड़ी हलचल हुई । इस हलचल को देखकर हमारे हृदयों में कुछ आशाओं का संचार हुआ । कुछ ही क्षणों में नारायण ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं। शरीर में एक दिव्य चेतना का संचार हुआ । मेरी आँखों से आनंदाश्रुओं की अविरत धारा बह निकली ।

*मेरी बेटी ने गुरुमंत्र का जप शुरू किया । कटोरी में रखे पानी में निहारा । वही पानी नारायण पर छाँटा । बच्चे के शरीर में थोड़ी हलचल हुई। कुछ ही क्षणों में नारायण ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं ।*

जिनके कृपा-प्रसाद से उसे यह जन्म मिला, उन्हीं की करुणा-कृपा से उसे नया जीवनदान मिला । मैं आज ऐसे सद्गुरुदेव के सत्संग,

सान्निध्य व मंत्रदीक्षा के कारण मिले धैर्य, श्रद्धा, भक्ति के कारण अपने आपमें धन्यता का अनुभव कर रही हूँ ।

*- चंद्रिकाबहन प्रवीणचंद्र पांचाल*
*लुणावाड़ा, पंचमहाल ।*

❀

# विपत्ति में गुरुदेव की दिव्य प्रेरणा ने बचाया

मैं राजेन्द्र प्रसाद शर्मा मन्डी बोर्ड उज्जैन में सब इंजीनियर पद पर कार्यरत हूँ । दिनांक ४ अप्रैल ९६ को रात्रि करीब १०-३० बजे हरदा इन्दौर मार्ग पर चापड़ा से इन्दौर के लिए टैक्सी से रवाना हुआ । साथ में मेरे एक करीबी मित्र भी थे । रास्ते में टैक्सी का टायर पंक्चर हुआ । ड्रायवर ने पच्चीस तीस मिनट के श्रम में टायर बदल दिया । रात्रि के ११ बज चुके थे । वहाँ से चार-पाँच कि.मी. ही चले थे कि हम पर विपत्तियों का पहाड़ टूटा । जंगल में घाट पर करनावद फाटा से चढ़ते ही कंजरों ने गाड़ी को घेर लिया और पत्थर बरसाने लगे । हमने टैक्सी भगानी चाही लेकिन सड़क पर झाड़-झंखार डाल रखे थे । अब क्या होगा ? मेरे मन में तुरंत विचार आया : अपने रक्षक तो पूज्य सद्गुरुदेव हैं । मैंने मौन होकर बापू को याद किया : प्रभु ! मैं तो बस, आपका ही हूँ ।

**तेरे फूलों से भी प्यार तेरे काँटों से भी प्यार ।**
**जो भी देना चाहे दे दे किरतार ॥**

ग्वालियर सत्संग-कार्यक्रम में पूज्य बापू ने प्रपत्तियोग का समर्पण भाव बताया था : 'तेरा हूँ... तेरा हूँ...' बस फिर क्या था ? 'तेरा हूँ...' की महिमा याद आ गई । मेरे मुँह से निकल पड़ा :

''ड्राइवर ! गाड़ी को झाड़-झंखार के ऊपर से ही कुदा दो ।''

वही हुआ । गाड़ी वहाँ से ऐसे दौड़ी कि गाँव की चौकी पर ही जाकर रुकी । हमने रिपोर्ट लिखाई । पुलिस स्टाफ घटना स्थल को रवाना हुआ और हम अपने सफर में चल पड़े ।

दूसरे दिन ५ अप्रैल को इन्दौर से प्रकाशित सभी समाचार पत्रों में छपा था कि उस रास्ते आ रही शिवशक्ति बस को लूटा गया । हम दोनों मित्र एक दूसरे की ओर देखने लगे क्योंकि वह बस हमारे पीछे-पीछे ही आ रही थी ।

गुरुदेव की कृपा से हम विपत्तियों से किस तरह बचे यह पूरा-पूरा वर्णन करना हमारे बस की बात नहीं । मैं तो बस, इतना ही कहूँगा कि विपत्ति में पूरी श्रद्धा से ऐसे आत्मारामी संतों का स्मरण करने पर दिव्य प्रेरणा मिलती ही है । श्रद्धाहीन, नास्तिक, निगुरे बेचारे क्या जानें ?

गुरुदेव का चरणसेवक
***- राजेन्द्र प्रसाद शर्मा***
***२/६, अलखधाम नगर, उज्जैन (म. प्र.).***

## डाक से कैसेट मँगवाने सम्बन्धी जानकारी

अगर आप पूज्यश्री की आडियो-विडियो कैसेट पोस्ट पार्सल से मँगवाना चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें :

(१) कैसेट सिर्फ रजिस्टर्ड पार्सल से भेजी जाती है । VPP से नहीं भेजी जाती ।

(२) कैसेट का पूरा मूल्य एवं डाक खर्च पैकिंग खर्च के साथ अग्रिम डी. डी. अथवा मनीआर्डर से भेजना आवश्यक है । कैसेट का मूल्य इस प्रकार है :

(A) आडियो कैसेट : मूल्य रू. २०/- प्रति कैसेट

**इसके अतिरिक्त डाक खर्च इस प्रकार :**

५ कैसेट तक के लिए Rs. 12   15 कैसेट तक के लिए Rs. 24
10 कैसेट तक के लिए Rs. 18   20 कैसेट तक के लिए Rs. 30

**(B) विडियो कैसेट :** मूल्य Rs. 130/-(130 मिनट)
Rs. 185/-(180 मिनट)

**इसके अतिरिक्त डाक खर्च इस प्रकार :**

1 कैसेट तक के लिए Rs. 12   6 कैसेट तक के लिए Rs. 24
3 कैसेट तक के लिए Rs. 18   8 कैसेट तक के लिए Rs. 30

**खास सूचना :** एक साथ दस कैसेट लेने पर एक कैसेट भेंट दी जाती है लेकिन डाक से कैसेट मँगवाने पर कैसेट भेंट नहीं मिलेगी ।

❀ डी. डी. या मनीआर्डर भेजने का पता ❀
कैसेट विभाग, श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

# संस्था समाचार

**सूरत :** सूर्यपुत्री तापी नदी के तट पर स्थित आश्रम में दिनांक : २५ से २९ अगस्त तक पाँच दिवसीय सत्संग समारोह संपन्न हुआ ।

आश्रम में ध्यान योग शिविर का कोई आयोजन न होने पर भी बाहर से आनेवाले हजारों श्रद्धालु भक्तजनों को देखकर ऐसा लगता था कि यह ध्यान योग शिविर का ही आयोजन है । दिन में तीन-तीन बार सुबह, दोपहर, शाम पूज्य बापूजी की दिव्य अमृतवाणी का लाभ श्रद्धालुजनों को मिलता था । वाकई में इस बार इस सत्संग समारोह में भाग लेनेवाले सभी लोग अपने को भाग्यशाली समझ रहे थे । दिन में तीन-तीन बार पूज्य गुरुदेव का सत्संग-लाभ मिलना मानो सोने पे सुहागा ।

सूरत निवासी व आस-पास के क्षेत्रों के भक्तगण इस सुनहरे मौके का पूरा-पूरा लाभ लेने के लिये सुबह पाँच बजे प्रभातकाल की मंगल वेला में आश्रम आ जाते व ध्यान-भजन, जप में तल्लीन हो जाते । कुछ समय पश्चात् पूज्यश्री व्यासपीठ पर विराजते और उनके श्रीमुख से ज्ञानगंगा की अमृतवर्षा होती उसमें सभी अपने मनोमालिन्य को धोकर स्वयं में एक दिव्य चेतना के संचार का अनुभव करते थे ।

राष्ट्रसंत पूज्य बापूजी ने इस सत्संग समारोह के दौरान कहा :

*"दूसरों के प्रति स्नेह, सौजन्य रखने से पुण्य तो मिलता ही है साथ ही सम्मान भी मिलता है ।"*

उन्होंने ने कहा : *"श्रद्धापूर्वक सदाचरण तथा शास्त्रानुसार कर्म करनेवाला व्यक्ति मनोवांछित फल की प्राप्ति कर लेता है । श्रद्धा से श्रीहरि प्रसन्न होते हैं एवं श्रद्धावान सभी जगह विजय प्राप्त करता है ।"*

प्राणीमात्र के परम हितैषी पूज्य बापूजी ने धर्म क्रा जयघोष करते हुए कहा :

*"धर्म का पहला पाठ है श्रद्धा और नम्रता । जिसके अंदर श्रद्धा के साथ नम्रता है वही व्यक्ति महान है ।"*

उन्होंने कहा : *"जिसके जीवन में कपट नहीं है, जो 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' निःस्वार्थभाव से कर्म करता है वही वास्तव में धन्य है । वही जीवन में सफल हो जाता है । विघ्न-बाधाएँ, लांछन तो ऐसे निष्काम कर्म करनेवाले सबके जीवन में आती ही रहती हैं लेकिन साधक-भक्त उनसे विचलित नहीं होते अपितु और दृढ़ हो जाते हैं ।"*

दिनांक : २८-८-९६ को रक्षाबंधन महोत्सव (नारीयली पूनम) के पावन पर्व पर हजारों पूनम व्रतधारियों ने पूज्य बापूजी के दर्शन करने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण किया । पूज्यश्री ने इस पावन पर्व पर अपनी पीयूषवर्षी वाणी से श्रद्धालुओं को मंगल करते हुए कहा :

*"खुशामदखोरों के इर्द-गिर्द घूमने से आदमी दूर की नहीं सोच सकता है इसीलिये ये पर्व हमें अवसर देते हैं कि इस बहाने भी कहीं संत-महापुरुषों के चरणों में जायें, भगवान और भगवद्प्राप्त महापुरुषों की अनुभूतियों से हम लाभान्वित हों ।"*

पूज्य बापूजी ने कहा : *"ये उत्सव हमारे चित्त में सुषुप्त चेतन के आनंद को प्रगट करने का मार्गदर्शन देने में सहाय करते हैं । ये आध्यात्मिक उत्सव हमारे तनको तंदुरुस्त, मन को प्रसन्न और बुद्धि में समत्वयोग सींचने की व्यवस्था करते हैं ।"*

भाई-बहन के पवित्र प्रेम पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :

*"बहन भाई को राखी बांधती है । है एक छोटा-सा धागा लेकिन उसमें शुभ संकल्प और नियमबद्धता गिरते हुए जीवन को जीवनदाता से मिलाने की प्रेरणा देते हैं ।"*

इस बार सूरत समिति और सूरत के साधकों ने पूज्यश्री के श्रीचरणों में प्रार्थना की कि हमारा जन्माष्टमी पर्व राजकोट ले गया, तो रक्षाबंधन महोत्सव का सत्संग

# संस्था समाचार

सूरत : सूर्यपुत्री तापी नदी के तट पर स्थित आश्रम में दिनांक : २५ से २९ अगस्त तक पाँच दिवसीय सत्संग समारोह संपन्न हुआ ।

आश्रम में ध्यान योग शिविर का कोई आयोजन न होने पर भी बाहर से आनेवाले हजारों श्रद्धालु भक्तजनों को देखकर ऐसा लगता था कि यह ध्यान योग शिविर का ही आयोजन है । दिन में तीन-तीन बार सुबह, दोपहर, शाम पूज्य बापूजी की दिव्य अमृतवाणी का लाभ श्रद्धालुजनों को मिलता था । वाकई में इस बार इस सत्संग समारोह में भाग लेनेवाले सभी लोग अपने को भाग्यशाली समझ रहे थे । दिन में तीन-तीन बार पूज्य गुरुदेव का सत्संग-लाभ मिलना मानो सोने पे सुहागा ।

सूरत निवासी व आस-पास के क्षेत्रों के भक्तगण इस सुनहरे मौके का पूरा-पूरा लाभ लेने के लिये सुबह पाँच बजे प्रभातकाल की मंगल वेला में आश्रम आ जाते व ध्यान-भजन, जप में तल्लीन हो जाते । कुछ समय पश्चात् पूज्यश्री व्यासपीठ पर विराजते और उनके श्रीमुख से ज्ञानगंगा की अमृतवर्षा होती उसमें सभी अपने मनोमालिन्य को धोकर स्वयं में एक दिव्य चेतना के संचार का अनुभव करते थे ।

राष्ट्रसंत पूज्य बापूजी ने इस सत्संग समारोह के दौरान कहा :

*"दूसरों के प्रति स्नेह, सौजन्य रखने से पुण्य तो मिलता ही है साथ ही सम्मान भी मिलता है ।"*

उन्होंने ने कहा : *"श्रद्धापूर्वक सदाचरण तथा शास्त्रानुसार कर्म करनेवाला व्यक्ति मनोवांछित फल की प्राप्ति कर लेता है । श्रद्धा से श्रीहरि प्रसन्न होते हैं एवं श्रद्धावान सभी जगह विजय प्राप्त करता है ।"*

प्राणीमात्र के परम हितैषी पूज्य बापूजी ने धर्म का जयघोष करते हुए कहा :

*"धर्म का पहला पाठ है श्रद्धा और नम्रता । जिसके अंदर श्रद्धा के साथ नम्रता है वही व्यक्ति महान है ।"*

उन्होंने कहा : *"जिसके जीवन में कपट नहीं है, जो 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' निःस्वार्थभाव से कर्म करता है वही वास्तव में धन्य है । वही जीवन में सफल हो जाता है । विघ्न-बाधाएँ, लांछन तो ऐसे निष्काम कर्म करनेवाले सबके जीवन में आती ही रहती हैं लेकिन साधक-भक्त उनसे विचलित नहीं होते अपितु और दृढ़ हो जाते हैं ।"*

दिनांक : २८-८-९६ को रक्षाबंधन महोत्सव (नारीयली पूनम) के पावन पर्व पर हजारों पूनम व्रतधारियों ने पूज्य बापूजी के दर्शन करने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण किया । पूज्यश्री ने इस पावन पर्व पर अपनी पीयूषवर्षी वाणी से श्रद्धालुओं को मंगल करते हुए कहा :

*"खुशामदखोरों के इर्द-गिर्द घूमने से आदमी दूर की नहीं सोच सकता है इसीलिये ये पर्व हमें अवसर देते हैं कि इस बहाने भी कहीं संत-महापुरुषों के चरणों में जायें, भगवान और भगवद्प्राप्त महापुरुषों की अनुभूतियों से हम लाभान्वित हों ।"*

पूज्य बापूजी ने कहा : *"ये उत्सव हमारे चित्त में सुषुप्त चेतन के आनंद को प्रगट करने का मार्गदर्शन देने में सहाय करते हैं । ये आध्यात्मिक उत्सव हमारे तनको तंदुरुस्त, मन को प्रसन्न और बुद्धि में समत्वयोग सींचने की व्यवस्था करते हैं ।"*

भाई-बहन के पवित्र प्रेम पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :

*"बहन भाई को राखी बांधती है । है एक छोटा-सा धागा लेकिन उसमें शुभ संकल्प और नियमबद्धता गिरते हुए जीवन को जीवनदाता से मिलाने की प्रेरणा देते हैं ।"*

इस बार सूरत समिति और सूरत के साधकों ने पूज्यश्री के श्रीचरणों में प्रार्थना की कि हमारा जन्माष्टमी पर्व राजकोट ले गया, तो रक्षाबंधन महोत्सव का सत्संग

हमें मिलना ही चाहिये । उनके विनम्र आग्रह से पाँच दिवसीय रक्षाबंधन महोत्सव सत्संग समारोह बड़ी धूमधाम से, तप, त्याग, सेवा एवं सुमिरण से सूरत आश्रम में मनाया गया ।

हर वर्ष की नांई सूरत आश्रम में हजारों-हजारों साधकों ने जन्माष्टमी मनायी और पूज्य बापूजी ने राजकोट से टेलीफोन पर सत्संग भी दिया ।

**अहमदाबाद योग वेदान्त सेवा समिति ने** रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दिनांक : २८-८-९६ के दिन साबरमती सेन्ट्रल जेल में २००० केदियों को बहनों के द्वारा रक्षाबंधन, फल एवं सत्साहित्य का वितरण किया ।

**गोंडल (सौराष्ट्र) :** दिनांक : २८-८-९६ से १-९-९६ तक गोकुलधाम, गोंडल में आयोजित सत्संग समारोह में गोंडल व आसपास के क्षेत्रों की धर्मप्रेमी जनता पावन हुई । दिनांक : २८ से ३० तक श्रद्धालुओं ने आश्रम के साधक श्री सुरेशानंदजी के सान्निध्य में उनके वचनामृतों का लाभ लिया । दिनांक ३०-८-९६ की शाम को पूज्यश्री गोंडल पधारे । मानो गोंडल में दो दिवसीय मिनी कुंभ शुरू हुआ । ३१-८-९६ और १-९-९६ के दिन भक्तजनों ने पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी का लाभ लिया । साथ ही हजारों लोगों ने पूज्यश्री के समक्ष हाथ ऊपर उठाकर बीड़ी, तम्बाकू, सिगरेट, शराब आदि दुर्व्यसनों को छोड़ने का संकल्प किया । विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए अपनी हृदयस्पर्शी वाणी में पूज्य बापूजी ने कहा :

*"तुम किसी भी संप्रदाय को मानो, भगवान श्रीकृष्ण को मानो या भोले बाबा को मानो, और किसीको नहीं भी मानो तो भी मेरी ना नहीं परंतु तुम्हारा शरीर तंदुरुस्त रहे, तुम्हारा मन प्रसन्न रहे, बुद्धि में समता रहे, साथ ही बुद्धि में बुद्धिदाता का आनंद प्रगट हो यही मैं चाहता हूँ ।"*

**राजकोट :** दिनांक : १-९-९६ को गोंडल में पूर्णाहुति के बाद रात्रि में लगभग ९ बजे के आसपास पूज्यश्री राजकोट आश्रम पहुँचे । पूरे गुजरात राज्य में राजकोट शहर में श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है । काफी दिन पहले से ही शहर में जगह-जगह सजावट व महोत्सव धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं । इधर रेसकोर्स मैदान में भी दिनांक : ४-९-९६ से ८-९-९६ तक आयोजित होनेवाले श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव की काफी दिनों से तैयारियाँ शुरू हो चुकी थीं । दिनांक ४-९-९६ की सुबह सत्संग के प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ । पूज्यश्री के पांडाल में प्रवेश करते समय ५१ कलशधारी बालिकाओं ने पूज्य बापूजी का स्वागत किया । तदुपरांत स्वागत गान गाया गया ।

दिनांक : ५-९-९६ को श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव के उपलक्ष्य में फूलछाब चौक से प्रारंभ हुई विशाल शोभायात्रा का शुभारंभ पूज्यश्री के करकमलों द्वारा ध्वज फरकाकर हुआ ।

पूज्य बापूजी ने रेसकोर्स मैदान में श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव के पावन पर्व पर विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए कहा :

*"जब क्षीण मनवाले मनुष्य पृथ्वी पर बढ़ते जाते हैं और दूसरों का भी जीवन क्षीण करने लगते हैं, तब स्वार्थ बढ़ जाता है, संघर्ष बढ़ जाता है, चित्त की शांति, माधुर्य, सृष्टि का संतुलन बिगड़ता जाता है । जब-जब सृष्टि का संतुलन बिगड़ता है तब-तब प्राणीमात्र का अंतरात्मा, द्रष्टा, साक्षी, अणु-अणु में समाया हुआ शुद्ध-बुद्ध चैतन्य साकार रूप लेकर प्रगट होता है और धूर्त, दूसरों का शोषण करके सुखी होनेवाले असामाजिक तत्त्वों को सावधान करता है । वे सावधान हो जायें तो ठीक है नहीं तो उनकी सद्गति करके सुख-शांति, माधुर्य की अद्भुत व्यवस्था करने के लिये सच्चिदानंद की लीला होती है । ऐसा ही अवतार है श्रीकृष्ण का अवतार ।*

श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव खूब धूम-धाम से मनाया गया जिसमें पूज्यश्री के सान्निध्य में आंतरराष्ट्रीय एवोर्ड विजेता पोरबंदर की प्रसिद्ध रासमंडली ने अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन किया ।

श्रोताजनों में मक्खन-मिश्री का प्रसाद वितरण

किया गया । महोत्सव दरम्यान गुजरात भा. ज. पा. के प्रदेश प्रमुख श्री वजुभाई वाळा, राजकोट के सांसद डा. वल्लभभाई कथीरिया, डिस्ट्रिक्ट सैशन जज श्री बूच साहब, टेलीकोम जनरल मेनेजर श्री गुप्ता एवं सभी वर्गों के आगेवानों ने पुष्पमालाओं से पूज्यश्री का स्वागत किया एवं पूज्यश्री के मुखारविन्द से प्रस्फुटित अमृतमयी वाणी का रसास्वादन कर स्वयं को धन्य-धन्य किया । हजारों लोगों ने बीड़ी, तम्बाकू, सिगरेट, शराब आदि दुर्व्यसनों को छोड़ने का संकल्प किया ।

दिनांक : ८-९-९६ को महोत्सव के अंतिम दिन हजारों श्रद्धालु भाई-बहनों ने दीपक जलाकर 'आनंद-मंगल करूँ आरती...' गाकर अपने श्रद्धा-सुमन पूज्य बापूजी को अर्पण किये । तदुपरांत पूज्यश्री ने शंखनाद कर पूर्णाहुति की घोषणा की ।

# पू. बापू के सत्संग कार्यक्रम

**(१) पुष्कर-अजमेर में वेदान्त शक्तिपात साधना शिविर** : ता. २६ से २९ सितम्बर ९६. जाहिर सत्संग रोज शाम ३-३० से ५-३०. पुष्कर मेला ग्राउन्ड. फोन (०१४५) ७२१३९, ३२९३९, ३३५१६. **(२) उझानी में संभावित गीता भागवत सत्संग समारोह** : ३० सितम्बर ९६. सुबह ९ से ११-३० शाम ३-३० से ६. श्री रामलीला ग्राउन्ड । फोन : (उझानी) (०५८३२) ६२५१३. (बिसोली) (०५८३४) ४६२०. **(३) अंबाला में ज्ञान भक्ति सत्संग समारोह** : ता. २ से ६ अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग-प्रवचन : ५ अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल : गांधी मैदान । फोन : ६४३०५३, २०७७३, ६४२५३४, ६४०५७५. **(४) अयोध्या में दिव्य ज्ञानामृत सत्संग-वर्षा** : ता. ९ से १३ अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन : १२. अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल : कार सेवक पुरम । फोन : (०५२७) ८१२७११, ८१२४४४. **(५) गोरखपुर में सत्संग योगामृत वर्षा** : ता. १६ से २० अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन : १८ अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल : गोरखनाथ मंदिर परिसर । फोन (०५५१) ३३३८१६, ३३२३३०, ३४१२०४, ३३४०४१. **(६) वीरगंज-नेपाल में गीता भागवत सत्संग समारोह** : ता. २३ से २७ अक्तूबर ९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. फूटबॉल ग्राउन्ड, आदर्शनगर । फोन २२४३५, २२३२१, २२५२९, २१२४८. **(७) कलोल (गुज.) में (संभावित)** ता. ३ से ६ नवम्बर ९६. **(८) फजिल्का में भक्ति ज्ञान सत्संग सरिता** : ता. १४ से १७ नवम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन १६ नवम्बर सुबह ९-३० से १२. स्थल : गवर्नमेन्ट सिनियर हायर सेकेण्डरी स्कूल (Boys), फजिल्का । फोन ६२०५६, ६१५८९. **(९) अमृतसर में ज्ञान भक्ति योग सत्संग समारोह** ता. १९ से २५ नवम्बर '९६. **(१०) करनाल में** ता. २८ नवम्बर से २ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. स्थान सेक्टर १२, हुडा मैदान । फोन : २५११३७, २५०१०५, २५०४६०, २३१८४, २५२०९५ **(११) हिसार में ज्ञान भक्ति योगवाणी** : ता. ४ से ८ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग-प्रवचन ७ दिसम्बर सुबह ९-३० से १२. स्थल : पुलिस लाइन फोन ३४९४६, ३४४९१. **(१२) जोधपुर में भक्ति योग वेदान्त वर्षा** : ता. ११ से १५ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. गांधी मैदान, सरदारपुरा फोन : (०२९१) ४२५००, ४०९५१, ४२५६८, ४८००० **(१३) बड़ौदा में** : ता. १८ से २२. दिसम्बर '९६

पूज्यश्री की मंगल आरती करते हुए भक्तजन
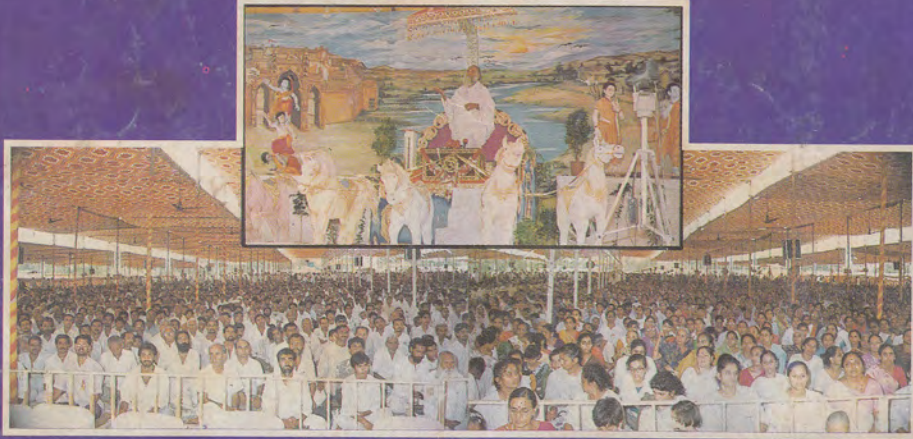
जन्माष्टमी के पवित्र पर्व पर पूज्यश्री के सत्संग का
अमृतपान करते हुए राजकोट के भक्तजन...

जन्माष्टमी महोत्सव पर राजकोट शहर में निकली डेढ़
कि. मी. लम्बी रथयात्रा को आशीर्वचन एवं विदाई देते हुए।

फरीदाबाद में निजानंद की
मस्ती में मस्त पूज्य बापूजी
के सुप्रवचनों का आचमन
करने उमड़ा अपार जनसमूह

REGISTERED WITH R.N.I. UNDER NO. 48873/91 LICENSED TO POST W/O PRE-PAYMENT : AHMEDABAD PSO LICENCE NO. 207 Regd. NO. GAMC/1132. BOMBAY, BYCULLA PSO LICENCE NO. 1. Regd. NO. MH/MNV-01